Regi. No.: MP HIN / 2006 / 16764 डाक पंजीयन क्र. म.प्र. भोपाल / 632 /2018 - 20

वीर निर्वाण संवत २५४५
माह- जून २०१९
अङ्क -०३ (१९६)
वर्ष -१४ (१९)

विरागवाणी

मासिक

आशीर्वाद

संत शिरोमणि प.पू. आचार्य श्री विरागसागर जी महाराज

प्रेरक : ब्र. श्री विशल्य भारती जी
निर्देशन : मुनि श्री विवर्धन सागर जी महाराज
सम्पादक : इंजी.आनन्दकुमार जैन, 9425620668
175, एम. गौतम नगर, भोपाल
सहसम्पादक : श्री देवकुमार जैन गुड़ा
४९/सी, कस्तूरबा नगर, भोपाल
मो. 09425608438
परामर्श मण्डल : डॉ. प्रो. सनत जैन, जयपुर
: श्री अनिल सेठिया महुआ (भीलवाड़ा)
: श्रीमति प्रमिला जैन 'पम्मी' कोटा
: प्रो.श्री मयंक जैन, टीकमगढ़
: श्री मुकेश जैन, पथरिया
: श्री कपूरचंद बंसल, जतारा
प्रकाशक एवं
प्रबंध सम्पादक : श्री अनूप कुमार जैन
कार्यालय : जी-१४१ गौतम नगर, भोपाल-२३
☎ : 0755-2789703, मो.9425016879
Email-viragvani.jain@yahoo.com
(बैंक ड्राफ्ट 'विरागवाणी'के नाम से भेजें) पत्रिका के सम्बंध में पत्राचार एवं रचनाएँ कार्यालय के पते पर भेजें
कार्पोरेशन बैंक : A/c No. 065300201000101
IFSC CODE : CORP0000653
स्वामित्व : श्री सम्यग्ज्ञान दि. जैन विराग विद्यापीठ, भिण्ड (म.प्र.)

इस वेबसाइट से गणा. विरागसागर जी के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करें। www. ganacharyaviragsagar.com

विरागवाणी सदस्यता

परम शिरोमणी संरक्षक	-	५१०००/-
शिरोमणि संरक्षक	-	११०००/-
परम संरक्षक	-	५०००/-
संरक्षक	-	३१००/-
दस वर्ष	-	११००/-
मूल्य	-	१०/-

- **समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल होगा।**
- **प्रकाशित विचारों से संपादक की सहमति जरूरी नहीं हैं। वह लेखक के अपने विचार हैं।**

पल्लव दर्शिका

❖ **सम्पादकीय :** **पल्लव**
- हमारे देश की संस्कृति : इंजी.आनन्दकुमार ४
- आत्मचिन्तन ५
- जिनोपदेश : श्रमणमुनि विश्वस्तसागर जी ५

❖ **प्रवचन एवं लेख**
- श्रुतावतार-श्रुतपंचमी महापर्व : श्री विरागसागरजी ६
- वात्सल्य किसमें और कैसा: श्री विरागसागर जी ११
- हमारे सारे प्रयास अंधेरा ...:आ.विनम्रसागरजी १३
- मायाचारी छिपती नहीं : आर्यि.विदूषीश्री माता १३
- मनुष्य की देह पुदगल परमाणुओं का संकलन है : विमर्शसागर जी महाराज १४
- आत्मोत्कर्ष का आयाम: प्रत्याख्यान : आचार्यश्री विशुद्धसागर जी महाराज १४
- लालच का फल : आर्यि. वियोजनाश्री माता जी १५
- भोजन कैसे करें : आर्यि. विसंयोजनाश्री माता जी १६
- ईश्वर की ... : ब्र. राजकुमार जैन १६
- दुर्जन संगति का परिणाम : आर्यि. विसुव्रताश्री १७
- प्राणायाम की प्रक्रिया : आर्यि. पुनीतचैतन्यमति १८
- प.पू.गुरुदेव के लिए विनयांजलि समर्पित - २१
- आध्यात्मिक शंका-समाधान :श्री विरागसागरजी २६
- नित्य दांतोन करना...: संस्कार सुरभि से साभार २७
- विराग सेतु ... : डॉ. उदयचन्द्र जैन २८

❖ **कविताएँ**
- शुचिमय सरितो : आ. श्री विशुद्धसागर जी १७
- विरागाष्टकम् : पं. श्री लोकेश जैन १९
- हे गुरुवर मेरे नायक हो : : कांति कुमार जैन १९
- विरागसागर नाम हमें.... : पं. वीरेन्द्र जैन २०

❖ **स्वास्थ्य जगत-**
- स्वस्थ रहने के उपाय : आर्यि.विवक्षाश्रीमाता जी ३०

❖ **समाचार** २५, ३३

❖ **विराग वर्ग पहेली** ३४

संपादकीय

हमारे देश की संस्कृति

इंजी. आनन्द कुमार जैन

हम जिस देश में रह रहे हैं उस देश का नाम भारत है। भारत में विद्यमान विभिन्न जातियाँ ऐसे आनन्द को देने वाली हैं। जिस प्रकार किसी उद्यान में नाना प्रकार के वृक्षों से लदे हुये फलों को देखकर के व्यक्ति के नयन व नासिका तृप्त हो जाती है व मन आनन्द से झूम जाता है। भारत वैसे ही आनन्द को देने वाला है जैसे सघन मेघों को देखकर के मयूर नाचने लगते हैं ऐसे भारत की संस्कृति, मर्यादा, रीति-रिवाज और धर्म क्रियाओं को देखकर के भक्त लोगों का मन मयूर नाचने लगता है। भारत विभिन्नता में एकता का संदेश देने वाला है जैसे किसी के गले में पड़ा हुआ सोने का हार इतना सुशोभित नहीं होता या एक ही प्रकार की माला है तो तो सुशोभित नहीं होती। यदि इस माला में नाना प्रकार के रत्न मोती लगाये जाते हैं तो उसकी शोभा बढ़ जाती है। कैसे बढ़ जाती है? जैसे किसी व्यक्ति के सामने बहुत सारा हलवा परोस दिया जाये तो उसे आनन्द नहीं आता या अकेला दूध ही दूध रख दिया जाये तो उसका पेट नहीं भरेगा। किन्तु जब नाना प्रकार के व्यंजन से मुक्त भोजन थाली सजाकर रखी जाती है तो उसे भोजन में स्वाद आ जाता है। इसीलिये भारतीय लोग पूजा भी करते हैं तो एक द्रव्य से नहीं। यह परम्परा है, संस्कृति है कि जल से भी पूजा करेंगे, चंदन से भी पूजा करेंगे, अक्षत से, पुष्प से, नैवेद्य, दीपक, धूप, फलों से करेंगे। भारतीय संस्कृति में सबको समाहित करने की परम्परा है। भारतीय संस्कृति के विभिन्न मूल सिद्धान्तों की चर्चा आज करते हैं कि भारतीय संस्कृति में क्या विशेषताएँ हैं किन विशेषताओं के कारण हम भारत को अन्य देशों से पृथक मानते हैं। अन्य देशों की अपेक्षा से भारत को श्रेष्ठ माना जाता है न केवल भारतीय लोगों की दृष्टि में अपितु अन्य देश में रहने वाले लोगों की दृष्टि में भी भारत एक विशेष देश माना जाता है और इतना ही नहीं कुछ लोग भारत को सोने की चिड़िया कहते हैं तो कुछ लोग भारत को विश्वगुरु कहते हैं, कुछ लोग कहते हैं भारत तो एक मंदिर है, कुछ कहते हैं भारत तो आर्दश है व न्याय नीति पर चलने वाला है, ऐसे सभी की मान्यताएँ अलग-अलग हैं। कुछ लोग भारत को आध्यात्मिक विद्या का आदि केन्द्र कहते हैं।

परम पूज्य गणाचार्य १०८ श्री विरागसागर जी महाराज बताया कि विश्व वैज्ञानिक आंस्टीन हुये उन्होंने अपने विचारों में कहा कि मुझे पता नहीं पुनर्जन्म होता है या नहीं लेकिन यदि होता हो तो मेरा जन्म भारत में हो क्योंकि भारत ऋषि मुनियों की आचार्यों की साधु संत, तपस्वीयों की धरती है यहां केवल सुख से रहने की बात ही नहीं, कल्याण की भी सिखाई जाती है इसलिये में चाहता हूँ कि मेरा जन्म भारत में हो और वह भी जैनधर्म में हो। बन्धुओं यह शब्द सुनते ही हमें गर्व हेाता है कि हमारा जन्म ऐसे महान धर्म में हुआ है। महात्मा गांधी जी ने चर्चिल के लिये एक पत्र लिखा था उसमें उन्होंने लिखा कि में चाहता था कि नग्न दिगम्बर मुनि बनूँ और अपने जीवन को सार्थक सफल करूँ लेकिन यह हो नहीं सका। बन्धुओं जैन किसी व्यक्ति विशेष का नहीं है। एक बात और याद रखना जैन कोई जाति नहीं है जैन एक धर्म है इसलिये वह जाति और संप्रदाएँ विशेष का नहीं किसी पंथ विशेष का नहीं है जैन धर्म प्राणीमात्र का विषय है। तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी के समवशरण में मनुष्य भी बैठते थे, राजा भी बैठते थे, भिखारी भी बैठते थे शेर और गाय भी बैठती थी और क्रूरता से नहीं प्रेमभाव के साथ बैठते थे।

आत्मचिन्तन

(प.पू. आ. श्री १०८ विमलसागर जी महाराज की नित्य डायरी से साभार ३०.१०.१९८२)

।। ऊँ ह्रीं णमो लोए सव्व साहूणं।।

हे आत्मन्! संसारी भव्य प्राणी संसरार्णव से पार होने के लिए वीतराग सर्वज्ञ हितोपदेशी देवाधिदेव प्रथमानुयोग, करुणानुयोग, चरणानुयोग द्रव्यानुयोग सिद्धान्तशास्त्र और आचार्य उपाध्याय साधु निर्ग्रन्थ गुरु की उपासना पूजन अर्चन ध्यानमनन चिन्तन करना श्रेओमार्ग १००८ श्री देवाधिदेव भगवान महावीर स्वामी ने अपनी दिव्यवाणी द्वारा बतलाया है कि भव्य प्राणी मात्र पर दया धारणकर विशेष कहा जिससे मेरे समान उस मंगलमय लोकोत्तम वन जाय और जोक्रूर भाव आर्तध्यान, रौद्रध्यान है उसका नाश और जो प्रशस्त धर्म ध्यान का पात्र बनकर स्वपर का कल्याण करे और जामन मरण के महादुखों का क्षयकरे और महाशान्ति का पात्र जामन मरण से रहित होकर जीवन्मुक्त परमात्मा होना उसके लिए हे विमलात्मन सर्व प्रथम अष्ट मूलगुणों का धारण कर वाद में संसार शरीर भोगों से विरक्त होकर व्रतसंयम धारणकर सम्यक् दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यक चारित्र धारणकर सम्यकतप इन चार आराधनाओं का आराधक होकर जीवन्मुक्त परमात्मा शुद्ध बुद्ध आनंद धन सहज सुख के स्वामी हो जाओगे।

जिनोपदेश

संकलन- समाधिस्थ श्रमणमुनि विश्वस्त सागर जी महाराज की डायरी से संकलित

न विना यानपात्रेण तरितुं शक्यतेऽर्णवः।
नर्ते गुरुपदेशाञ्च सुतरोऽयं भवार्णवः।। आ.पु.प्र./१७५।।

अर्थ- जिस प्रकार सिद्धरस के संयोग से तांबा आदि धातुएँ सुवर्णपने को प्राप्त हो जाती हैं उसी प्रकार गुरुदेव के उपदेश से प्रकट हुए गुणों के संयोग से भव्य जीव भी शुद्धि को प्राप्त हो जाते हैं।

रसो पविद्धः सन् धातुर्यथा याति सुवर्णनाम्।
तथा गुरु गुणाश्लिष्टो भव्यात्मा शुद्धिमृच्छति।। आ.पु.प्र./१७४

अर्थ- जिस प्रकार जहाज के बिना समुद्र नहीं तिरा जा सकता है उसी प्रकार गुरु के उपदेश के बिना यह संसार रूपी समुद्र नहीं तिरा जा सकता।

यथान्धतमसच्छन्नान् नार्थान् दीपाद् विनेक्षते।
तथा जीवादि भावांश्च नो पदेष्टुर्विनेक्षते।। आ.पु.प्र./१७६

अर्थ- जिस प्रकार कोई पुरुष दीपक के बिना गाढ़ अंधकार में छिपे हुए घट-पट आदि पदार्थों को नहीं देख सकता उसी प्रकार यह जीव भी उपदेश देने वाले गुरु के बिना जीव, अजीव आदि पदार्थों को नहीं जान सकता।

बन्धवो गुरुश्चेति द्वये संप्रीतये नृणाम्।
बन्धवोऽत्रैव संप्रीत्यै गुरुवोऽमुत्र चात्र च।। आ.पु.प्र./१७७

अर्थ- इस संसार में भाई और गुरु ये दोनों ही पदार्थ मनुष्यों की प्रीति के लिए हैं। पर भाई तो इस लोक में ही प्रीति उत्पन्न करते हैं और गुरु इस लोक तथा परलोक दोनों ही लोकों में विशेष रूप से प्रीति उत्पन्न करते हैं।

यतो गुरु निदेशेन जाता नः शुद्धिरीदृशी।
ततो गुरुपदे भक्तिर्भूयाज्जन्मान्तरेऽपिन।। आ.पु.प्र/१७८

अर्थ- जब कि गुरु के उपदेश से ही हम लोगों को इस प्रकार की विशुद्धि प्राप्त हुई है तब हम चाहते हैं कि जन्मान्तर में भी मेरी गुरुदेव के चरण कमलों में बनी रहे।

सोऽधीर्यन्निखिलां विद्यां गुरु संस्कार योगतः। आ.पु.प्र./१३७

अर्थ- महाबल ने गुरुओं के संयोग और पूर्वभवः के संस्कार के सुयोग से समस्त विद्याएँ पढ़ ली।

श्रुतावतार-श्रुतपंचमी महापर्व

प्रवचन -परम पूज्य राष्ट्रसंत गणाचार्य विरागसागर जी महाराज

बन्धुओ! सारा संसार अंधकार में डूबा हुआ है। आज के समय में लोग कहते हैं कि विद्युत का आविष्कार हो गया है रात्रि में भी प्रकाश रहता है अंधकार तो दिखता ही नहीं हैं किन्तु फिर भी पूज्यपाद समन्तभद्र स्वामी आचार्य कहते हैं मुझे तो सारा संसार अंधकार मय ही दिख रहा है न सूर्य दिख रहा है न कोई लाईट ही दिख रही है, जहाँ देखता हूँ मात्र अंधकार ही अंधकार दिख रहा है वे कहते हैं यथा संभव अंधकार को दूर कीजिए। यह भी सत्य है कि इस अंधकार को सूर्य का प्रकाश भी दूर नहीं कर सकता तो वह कैसे दूर हो यह बतलाते हुए कहते हैं-

अज्ञान तिमिर व्याप्ति मपाकृत्य यथा यथम्।
जिन शासन महातम्य प्रकाशः स्यात् प्रभावनः।।

इस सारे संसार में अज्ञान रूपी अंधकार चारों ओर व्याप्त है। अज्ञान रूपी अंधकार ने सभी के विवेक रूपी नेत्रों को धुंधला कर दिया है इससे यदि कोई बचा है तो वे एकमात्र केवलज्ञानी भगवान बचे हैं। जिनके केवल ज्ञानरूपी सूर्य के सामने अज्ञान रूपी अंधकार नष्ट हो गया है।

बन्धुओ! आज श्रुत पंचमी का पावन पर्व है हमारे जैनागम का यह एक बहुत बड़ा रहस्य पूर्ण पर्व है। आज के दिन हम समझेंगे कि दिगम्बर धर्म में भगवान की वाणी किस प्रकार आज तक हमें प्राप्त होती आई है। हजारों वर्ष पूर्व भगवान कि दिव्य ध्वनि से प्राप्त अमृत को किस प्रकार हमारे आचार्यगणों ने सुरक्षित रखा। २४ तीर्थंकरों के बाद केवल ज्ञानियों की अक्षुण्य परम्परा चली उनमें भगवान महावीर स्वामी के मोक्ष होने के दिन ही गौतम स्वामी को केवलज्ञान प्राप्त हो गया उन्हें जिस दिन मोक्ष हुआ उसी दिन सुधर्माचार्य को केवल्य की प्राप्ति हो गई इसी प्रकार अंतिम अनुबद्ध केवली जम्बूस्वामी हुए। यहाँ तक एक भी दिन केवल ज्ञानी का विच्छेद नहीं हुआ लेकिन जम्बूस्वामी के बाद यह परम्परा विच्छिन्न हो गई थी अनुबद्धता नहीं रही। दिन और वर्षों के अंतराल में केवलज्ञानी होने लगे और अंतिम केवली श्रीधर केवली हुए जिनका निर्वाण महाराष्ट के कुण्डल गिरी नाम के पर्वत से हुआ था। कतिपय लोग बुण्देलखण्ड के कुण्डलपुर से भी उनका मोक्ष मानते हैं। इनके बाद केवलज्ञान रूपी सूर्य अस्त हो गया केवली होना बंद हो गये। इसके बाद श्रुत केवली की परम्परा चली जिनमें पूर्णश्रुत केवली ग्यारह अंग चौदह पूर्वों के ज्ञाता ५ आचार्य हुए विष्णुकुमार, नंदिमित्र, अपराजित, गोवर्धन, भद्रबाहु इन पांचों का काल १०० वर्ष का रहा इसके बाद विशाखाचार्य पोष्ठिल, क्षत्रिय, जयसेन, नागसेन, सिद्धार्थ, घृतिसेन, विजय बुद्धिलिंगाचार्य एवं देवाचार और धर्मसेनाचार्य ये ग्यारह आचार्य हुए इन्हें ग्यारह अंग और १० पूर्व का ज्ञान था इनका काल १८३ वर्ष का रहा। इनके बाद नक्षत्र, जयपाल, पाण्डव, ध्रुवसेन, कंसाचार्य थे सभी ग्यारह अंग के धारी थे। इनका काल १२३ वर्ष तक रहा। इनके बाद सुभद्र, यशोभद्र भद्रबाहु, लोहाचार्य ये क्रमश १०, ९, ८, ७ अंगों के ज्ञाता थे इनका काल ९७ वर्ष का था। इनके बाद अर्हद्बली माघनंदि, धरसेन पुष्पदंत और भूतबली ये पांचों ही आचार्य महाराज अंगांश के ज्ञाता रहे इनका काल ११८ वर्ष का था।

बन्धुओ! बड़ी खुशी की बात है यहाँ तक अनवरत भगवान महावीर स्वामी की दिव्य देशना यथावत् चलती रही। यहाँ तक आचार्यगण अपने शिष्यों को सूत्र सुनाते थे और शिष्य भी यथावत् उसे जैसा का तैसा अपने मस्तिष्क में रखते थे। यहाँ तक लिखने की कोई परम्परा नहीं थी लिखने के लिए अच्छा नहीं माना जाता था। ऐसी मान्यता थी जो लिखा जायेगा वे कागज पुराने होकर फटेंगे तो उनकी अविनय होगी इसलिए लिखना अच्छा नहीं माना जाता था। मात्र सुनाया जाता था इसलिए यहाँ तक श्रुत परम्परा अनवरत चलती रही। भगवान महावीर स्वामी को मोक्ष गये यहाँ तक ६८३ वर्ष व्यतीत हो चुके थे।

बन्धुओ! अंगाश के ज्ञाता आचार्य धरसेन स्वामी गिरनार जी में निवास करते थे। जो लोग गिरनार जी गये होगे उन्होंने जरूर उस धरसेन गुफा के दर्शन किये होंगे जो पहली से २ किमी. आगे चलकर हैं प्रायः लोगों को जानकारी न होने के कारण नहीं पहुँच पाते हैं जिससे वहाँ का रास्ता भी अविरुद्ध जैसा है। लेकिन जब हम लोग गिरनार जी गये थे तब

हमारा संघ वहाँ दर्शन करने गया था। गुफा में आचार्य धरसेन स्वामी के चरण हैं। एक ही पत्थर की शिला में वह गुफा बनी हैं जिसमें एक ओर कमरा जैसा है जिसमें केवल एक ही साधु रह सकते हैं उसी से लगा दूसरा स्थान हैं जिसमें दो श्रमण शैय्यायें बनी हुई हैं जिसमें एक का स्थान है वह धरसेनाचार्य की गुफा है जिसमें दो स्थान है वह पुष्पदंत और भूतबली महाराज की गुफा है।

धरसेन महाराज अपने समय के बहुत बड़े आचार्य हुए अथवा यूँ कहें वे क्रांतिकारी सोच वाले थे जिन्होंने अपनी सोच से सारे लोगों की विचार धारा को बदल दिया था। उन्होंने जैनत्व की रक्षार्थ विचारा कि लोगों के अंदर श्रुत के विषय में विचार भेद उत्पन्न होने लगे हैं स्मृतियाँ स्खलन होने लगी हैं, याददाश्त कमजोर पड़ने लगी है जिससे विचारों में अंतर आने लगे हैं। जबकि अभी भगवान महावीर स्वामी को मोक्ष हुए मात्र ६८३ वर्ष ही हुए हैं, एक हजार भी पूरे नहीं हुए है। पंचम काल तो २१ हजार वर्ष का है यदि ऐसी ही स्थिति रही तो २० हजार वर्ष तक यह धर्म का ज्ञान कैसे रह सकेगा। आज ही जब विचार भेद हैं तो आगे चलकर तो कितने विचार भेद हो जायेंगे।

बन्धुओ! संप्रदायों का उद्‌गम केवल विचार भेदों से होता है जब दो प्रभावक व्यक्तियों के अंदर दो विचार आते हैं तो उन्हीं का आपसी संगठन संप्रदाये बन जाता है और धीरे-धीरे उसके अनेक रूप हो जाते हैं। आचार्य धरसेन स्वामी ने विचार किया कि यदि ऐसा ही रहा तो कालान्तर में सच्चे मार्ग की खोज करना भी कठिन हो जायेगा। अतः श्रुत (भगवान की वाणी) को लिपीवद्ध करना चाहिए ताकि कद्‌ाचित लोग दिग्भ्रमित हो तो शास्त्र को देखकर उसे प्रमाण मानकर एक सत्य धारा प्रवाह पर चलते रहे।

बन्धुओ! आज के युग में बड़ी बिडम्बना खड़ी हो गई है। जो भी आता है वह अपनी बात कह कर चला जाता है। फिर कोई दूसरे आते हैं वे अपने हिसाब की बात कह कर चले जाते हैं। अब विचारे भोले-भाले श्रावक क्या करें? कई बार तो वे ही सोचने लगतेहैं अब किसकी बात मानू किसकी नहीं मानू। कई जगह तो इन्हीं बातों से आपसी तनाव खड़ा हो जाता है। एक कहते हैं हम इनके भक्त हैं इनकी ही बात मानेंगे, तो दूसरे कहते हैं हम उनके भक्त है उनकी मानेंगे और यही तनाव समाज की एकता संगठन को तोड़ देता है, प्रेम, वात्सल्य की बगिया को उजाड़ देता है।

जब २००० सन् में हमारा चातुर्मास शिखर जी में था उसी समय वहाँ श्वेताम्बर साधु राजेन्द्र सूरि का भी चातुर्मास था। यद्यपि मैं उन्हें जानता नहीं था लेकिन उन्होंने भावना प्रकट की सम्मेद शिखर की यात्रा पर जाने वाले दिगम्बर साधुओं के संघ की आगवानी मैं करूंगा और वे हमारे पास आये। एक प्रवचन उन्होंने अपने यहाँ किया तो दूसरे प्रवचन के लिए वे मुझे अपने स्थान पर ले गये। जिससे संपूर्ण जैन समाज में एकता का शंखनाद हुआ था। मेरा सोचना है मतभेद है तो बना रहने दो लेकिन उसे मनभेद की स्थिति में मत पहुंचने दो मतभेद तो समाप्त हो सकते हैं लेकिन मनभेद कभी समाप्त नहीं हो पायेंगे। फिर तो एक साथ बैठना, उठना एक दूसरे को देखना भी कठिन हो जायेगा। उस समय मेरा त्याग पर प्रवचन हुआ था। जिसे सुनकर अन्य लोगों के साथ श्वेताम्बर कई साधु साध्वियों ने भी बड़े आदि के त्याग के लिए हाथ ऊपर कर लिए थे जिसे देख राजेन्द्रसूरि ने कहा- विरागसागर जी आपके एक प्रवचन का इतना प्रभाव पड़ा तो एक महीना यदि आपके प्रवचन सुन लिए तो ये सभी भी दिगम्बर साधु-साध्वियाँ बन जायेगे।

बन्धुओं! उस समय के धरसेनाचार्य के वे विचार बड़े ही महत्वपूर्ण थे। आज के समय में मतभेद और मनभेद का निराकरण करने वाली यदि कोई शक्ति है तो वह जिनवाणी है। जब कोई भी धर्म क्रियाओं के विषय में अन्यथा निरूपण करता है, मनमानी बात कहता है तो हमारे विद्वान, साधुजन एक ही बात कहते हैं शास्त्र निकालिए आगम का प्रमाण दीजिए। जिनवाणी (शास्त्रों) में पूर्वाचार्यो ने जो कथन किया है वह हमारे लिए प्रमाण है। बन्धुओ! यदि सभी के अंदर यही सोच आ जाए तो दिन प्रतिदिन बढ़ने वाली सारी समस्याओं का समाधान हो जायेगा। आज जब हम देखते हैं तो बहुत सारे लोगों की पूजा आदि पद्धतियों में भी अंतर दिखता है। कितने लोग स्थापना के बाद पुष्पाञ्जलि क्षिपेत करते हैं। क्या आपने कभी शास्त्रों के पन्ने पलटाये हैं। शास्त्रो में प्रमाण ढूढ़ने का प्रयत्न किया है क्या? जिसने जो भी कहा आपने स्वीकार कर लिया, वैसी क्रिया प्रारंभ कर दी और तो क्या जिनवाणी प्रकाशन कराने वाले भी उसी प्रवाह में वह गये उन्होंने जिनवाणी

में भी वैसा ही लिख दिया। कई जगह के भोले प्राणी उन्हीं नव प्रकाशन जिनवाणी को उठाकर कहने लगते हैं इसमें तो लिखा है।

बन्धुओ! बड़ी समस्या है लिखना, पढ़ना और छापना सरल है लेकिन आगम का प्रमाण देना बड़ा कठिन होता है। इसलिए सहसा किसी के कहने में आकर पूजा आदि किसी भी प्राचीन पद्धति में परिवर्तन न करें। प्राचीन जिनवाणी उठाकर देखो उनमें पुष्पाञ्जलि क्षिपेत विसर्जन के बाद की जाती है पुष्पाञ्जलि क्षिपेत इत्य आशीर्वाद इसका मतलब पुष्पाञ्जलि छोड़कर हमने आशीर्वाद लिया अर्थात् जिस पूजा की स्थापना की थी उनका विसर्जन कर दिया। यदि प्रारंभ में ही पुष्पाञ्जलि क्षिपेत कर दी तो फिर पूजा किसकी करोंगे। कतिपय ब्रह्मचारी पण्डित अपनी छाप बनाने के लिए नयी-नयी पद्धतियाँ प्रारंभ करते हैं उनकी सोच रहती है हमारी भी कोई पहचान हो लोग हमें जाने। लेकिन ध्यान रखो प्राचीन आचार्यों की पद्धतियों को चेन्जकर के तुम प्रसिद्ध नहीं बदनाम हो रहे हो। अज्ञान दशा में भले ही लोग आपकी पद्धति को अपनालें लेकिन जब वे शास्त्र प्रमाण देखेंगे तो उनकी दृष्टि में आपका सम्मान बढ़ेगा नहीं अपितु और गिर जायेगा।

आप सभी श्रावकों से मेरा कहना है किसी भी विषय में लोग कुछ भी कहें आप प्रमाण मांगिये बिना प्रमाण के किसी भी पद्धति में कोई बदलाव न करें। हाँ यदि प्राचीन आचार्य प्रणीत शास्त्रों में उल्लेख मिलता है तो फिर उसे पत्थर की लखीर की तरह स्वीकार करो फिर किसी की बात मत सुनो।

पूज्य आचार्य धरसेन स्वामी ने सोचा कि कालान्तर में तो व्यक्ति की स्मृति और भी कम हो जायेगी। अत: लोगों को मतभेद और मनभेद से बचाना है, एक अखण्ड धर्म का प्रभाव बरकरार रखना है तो फिर श्रुत को लिखना होगा। लेकिन अब समस्या यह थी कि लिखे कौन? वृद्धावस्था होने के कारण उनमें न शास्त्र लिखने की क्षमता ही बची थी न समय ही। अत: उन्होंने उस समय युग प्रतिक्रमण की पद्धति को चलाने वाले अर्हद्बली आचार्य के पास एक पत्र भेजा था।

बन्धुओ! दिगम्बर श्रमण परम्परा में यति सम्मेलन और युग प्रतिक्रमण की पद्धति अत्यंत प्राचीन रही है। आचार्य अर्हद्बली उस समय के ज्येष्ठ एवं प्रसिद्ध आचार्य थे वे प्रत्येक पांच वर्ष पश्चात् यति सम्मेलन युगप्रतिक्रमण का आयोजन करते थे। उस समय देश के सभी साधु उनके चरणों में एकत्रित होकर गुरुभक्ति एवं वात्सल्य की अद्वितीय उदाहरण देते थे। साधु का साधु से मिलन ही समाज को एकता के सूत्र में बांध देता है तथा साधुसंघों में भी परस्पर मिलन होने से वैचारिक एकता, विशालता, चर्या में भी सुधार आता है चाहे वह संकोच शर्म से आये अथवा डरभय से आये इसलिए मेरे मन में आया कि यति सम्मेलन, युगप्रतिक्रमण की यह परम्परा अनवरत चलना चाहिए और मुझे इस बात की बड़ी खुशी है कि वर्तमान में भी यह परम्परा प्रवाहमान है लोगों की भी उसमें बड़ी रूचि और रूझान है यही कारण है सन् २०१२ एवं २०१७ में जयपुर और झांसी करगुंवा क्षेत्र पर आप सभी ने वृहद् स्तर पर यतिसम्मेलन एवं युगप्रतिकमण का दृश्य देखा जो कभी किसी के मन से विसमृत नहीं हो सकता है।

आ.अर्हद्बली ने वह पत्र बड़े सम्मान के साथ लिया तथा खोला जिसमें कुशल क्षेम के पश्चात् लिखा था लोगों की स्मृति बुद्धि, श्रुतज्ञान निरंतर घटता जा रहा है इसलिए इस हीयमान बल को देखते हुए श्रुत की रक्षार्थ उसे लिपिवृद्ध करने की भावना जाग्रत हुई है इसी में, मैं अपने जीवन की सफलता समझता हूँ इस कार्य हेतु दो सुयोग्य शिष्यों की आवश्यकता है।

बन्धुओ! ऐसे महान आचार्य जिन्होंने पत्र भेजा, ध्यान रखना पत्र हर किसी के लिए नहीं भेजा जाता, जिस पर कार्यपूर्ण का विश्वास होता है आत्मीयता होती है। वही पत्र भेजा जाता है। पत्र पढ़ने वाले भी महान दूरदर्शी आचार्य थे उन्होंने पत्र पढ़ते ही अपने दो सुयोग्य शिष्य पुष्पदंत और भूतबली को अपने पास बुलाकर कहा-आज आप दोनों को मेरी आज्ञा का पालन करना है। शिष्यों ने कहा- गुरुदेव! आपकी आज्ञा पालन का अवसर मिले इससे बढ़कर हमारा क्या सौभाग्य होगा। गुरु की आज्ञा शिष्यों के लिए भारभूत नहीं उपहार स्वरूप होती हैं आज्ञा दीजिए। अर्हद्बली ने कहा- तो फिर आप लोगों को गुजरात प्रांत में जूनागढ़ के पास स्थित गिरनार पर्वत पर आचार्य धरसेन स्वामी के पास जाना है तथा उनकी आज्ञा का पालन करना है। बन्धुओ! यद्यपि कोई भी शिष्य अपने गुरु से दूर नहीं जाना चाहता है लेकिन गुरु आदेश का पालन भी वह सच्चे मन से करता है। दोनों मुनिराज गुरु आज्ञा से गुजरात प्रांत की ओर बढ़ते हैं चलते-चलते वे जूनागढ़

पहुँच गये। उस समय मोबाइल, फोन नहीं होते थे। कौन कब आ रहा है पता नहीं चलता था। आज के समय में तो व्यक्ति एक जगह बैठे-बैठे ही वीडियों कोलिंग से सब कुछ देख सकता है, सारी जानकारी ले लेता है कि आज कितने चले हैं कहाँ ठहरे हैं लेकिन उस समय ऐसा कुछ भी नहीं था। जिस दिन दोनों मुनिराज जूनागढ़ पहुँचे उसी रात्रि के अंतिम पहर में आचार्य धरसेन स्वामी स्वप्न में देखते हैं कि दो नादिया (छोटे बैल) दौड़ते हुए सामने से आये और चरणों में गिरकर नमस्कार कर रहे है। यह देखते ही उनकी नींद खुल गई और उनके मुख से सहज ही शब्द निकला 'जयदु सर्य देवता' श्रुत देवता (जिनवाणी) जयवंत हो। आचार्य महाराज ने प्रातः कालीन धार्मिक क्रियाएँ की। इतने में ही दोनों मुनिराज वहाँ पहुँच जाते हैं और उनके चरणों में भक्तिभाव से नमस्कार करते हैं। उस समय आचार्य धरसेन स्वामी की खुशी का पार नहीं था अपार खुशी उन्हें हुई। तीन दिन तक सामान्य परीचर्या हुई। ज्ञानी साधुओ! ध्यान रखो जाते ही परीक्षा लो ऐसा कहीं नहीं लिखा। मूलाचार स्पष्ट कहता है पहला दिन श्रम परिहार का होता है दूसरा दिन परीक्षा और तीसरा दिन उद्देश्य निवेदन का होता है। इन तीनों दिन सामान्य चर्चा व्यवहार होता है। मुनियों का आदर्श मिलन मेरा एक आलेख है जिसमें इन सभी बातों की गहराई से चर्चा की गई है उसका उद्देश्य है मिलन ३६ नहीं ६३ की तरह होना चाहिए। तीसरे दिन दोनों मुनिराजों ने आ. धरसेन के चरणों में उपस्थित हो सेवा का अवसर मांगा। धरसेनाचार्य ने दोनों महाराजों को एक-एक मंत्र दिये और कहा- आप दोनों को अलग-अलग बैठकर मंत्रों की साधना करना है। उन्होंने शिष्यों की परीक्षार्थ मंत्र में अक्षर कम ज्यादा कर दिये थे। जब दोनों महाराज मंत्र साधना में बैठे, बन्धुओ! पूज्य आचार्य गुरुदेव विमलसागर जी महाराज कहते थे अन्य लोगों को मंत्र साधना में देरी लग सकती है किन्तु दिगम्बर श्रमणों को देरी नहीं लगती उन्हें बहुत जल्दी सिद्धियाँ होती है। कितना भी सामान्य मुनि हो फिर भी उसके साथ दैविक सिद्धियाँ होती हैं क्योंकि उनकी साधना सहज ही सिद्धियाँ उत्पन्न कर देती है वे प्रकट हो पायें या न हो पाये।

पुष्पदंत, भूतबली महाराज ने जैसे ही मंत्र जाप्य प्रारंभ की, तो कुछ ही समय में उनके सामने देव ने आकर नमस्कार किया और आज्ञा मांगी। पुष्पदंत महाराज ने जैसे ही देव को देखा तो, उसके दो दांत आगे निकले देख उन्हें आश्चर्य हुआ। देव का शरीर तो सर्वांग सुन्दर होता है फिर ऐसा क्यों? कहीं न कहीं मंत्र में गड़बड़ है। उधर भूतबली महाराज के पास एक आँख से काना देव उपस्थित हुआ जिससे उन्हें भी मंत्र अशुद्धि का पता चल गया। महाराष्ट्र के कम्मदधल्ली नाम का एक नगर है वहाँ के मंदिर में दो देवों की मूर्ति है जिसमें एक देव का मुख खुला है उसमें एक भी दांत नहीं है और दूसरे देवता का मुख बंद है किन्तु दो दांत बड़े होने से बाहर निकले हैं। वहाँ के भट्टारक जी ने बताया था वे इसी कहानी से सम्बन्ध रखने वाले देव हैं। देवों का ऐसा स्वरूप देख दोनों विद्वान महाराजों ने मंत्र साहित्य के अनुसार मंत्र को शोधन किया, उसमें जो कम, ज्यादा अक्षर थे वे सही किये और पुनः साधना की तो पुनः सर्वांग सुन्दर देवगण उनके सामने उपस्थित हुए जिन्हें लेकर वे आ. धरसेन के पास पहुँचे और देवों को सौपते हुए बिना पूछे मंत्र शोधन की क्षमा मांगी। धरसेन आचार्य दोनों मुनियों की योग्यता देख अत्यंत प्रसन्न हुए।

साधु जीवन में साधना, आराधना मुक्ति के लिए होना चाहिए लौकिक सिद्धियों के लिए नहीं। अगर हमारी साधना चमत्कारों के लिए होने लगी तो मुक्ति का लक्ष्य विस्मृत हो जायेगा। भगवान महावीर स्वामी कहते हैं हम प्रशंसा ओर प्रतिष्ठा की ओर न दौड़ अपने लक्ष्य की ओर कदम बढ़ाये तो सिद्धियाँ, चमत्कार सहज ही तुम्हें सिद्ध हो जायेगे। वीतरागी संत सिद्धियों को परिग्रह मानते हैं। धरसेन आचार्य ने सिद्ध हुए दोनों देवों से कहा- जब अवश्यकता होगी तब आज्ञा दी जायेगी अभी आप भगवान की भक्ति करो।

उन्होंने दोनों शिष्यों को षट्खण्डागम का ज्ञान कराया और शिक्षा प्रदान कर उसे लिखने का आदेश दिया। दोनों को अलग-अलग दिशा में विहार का आदेश दिया, वह इसलिए ताकि अलग-अलग रहेगे तो कार्य गति से पूरा होगा यदि एक साथ रहे तो चर्चा-वर्ता में समय वर्वाद हो सकता है। पुष्पदंत महाराज कर्नाटक की ओर गये यद्यपि उनका जन्मनाम कुछ और था किन्तु सिद्धि के समय जो देव उपस्थित हुए उन्होंने उनके पूर्व से टेड़ीदंत पंक्ति को पुष्प की तरह सीधा कर दिया था तभी से उनका पुष्पदंत नाम पड़ा। दूसरे मुनिराज की सिद्धि में प्रकट होने वाले भूत जाती के देव ने नैवेद्यों से उनकी पूजा

की थी इसलिए उनका नाम भूतबली पड़ा गया था उन्होंने गुजरात की ओर विहार किया था।

कर्नाटक के बंदवासी ग्राम में पहुँच आ. पुष्पदंत महाराज ने षट्खण्डगम ग्रंथ का लेखन प्रारंभ किया था। हम लोग भी वहाँ जाकर एवं उस स्थान को देखकर आये हैं। आ. पुष्पदंत स्वामी में मात्र १७२ सूत्र ही लिख पाये कि उन्हें अपनी आयु के अवशान का ज्ञान हो गया। समाधि का समय निकट जान उन्होंने अपने भांजे जिनपालित को दीक्षा दी और उन्हें ग्रंथ सौप आ. भूतबली तक पहुँचाने की आज्ञा दी। बन्धुओ! षट्खण्डगम को छूने का अधिकार गृहस्थों को नहीं है, यही कारण है उन्होंने भांजे को दीक्षा दी थी। ग्रंथ आचार्य भूतबली के पास आया और उन्होंने शेष सारे मेटर को लिख उसे पूरा किया। ग्रंथ ज्येष्ठ शुक्ला पंचमी को पूर्ण हुआ तथा ग्रंथ की सुरक्षा के लिए अंकलेश्वर के राजा को वह भेंट किया गया। राजा ने भी जिन शासन के प्रथम ग्रंथ को पाकर बड़ी खुशी मनायी। आज के दिन ही राजा ने अपने प्रमुख हाथी पर चाँदी की पालकी में स्वर्ण सिंहासन पर ग्रंथ को विराजमान किया और संपूर्ण नगर में महोत्सव के रूप में शोभा यात्रा निकाली तभी से यह पंचमी श्रुत पंचमी के नाम से प्रसिद्ध हुई। इसका दूसरा नाम ज्ञान पंचमी भी कहा जाता है।

आज के युग में ज्ञान का बहुत अधिक महत्व है बच्चे यदि पढ़ने में कमजोर होते हैं तो उनके माता पिता को बड़ी चिंता हो जाती है। आज प्राय: कर बच्चे बुद्धि विकाश के लिए न जाने कहाँ-कहाँ के चक्कर लगाते हैं। दहरी-दहरी पर सिर टेकते हैं फिर भी उन्हें ज्ञान की प्राप्ति नहीं हो पाती है।

बन्धुओ! घबराओ नहीं, कहीं जाने की आवश्यकता नहीं है हमारे यहाँ श्रुत पंचमी व्रत है जो केवल वर्ष में एक दिन किया जाता है ज्येष्ठ शुक्ला पंचमी का यह व्रत है जो व्यक्ति की बुद्धि विकास का प्रबल हेतु है। इस व्रत को करने वाले छात्र-छात्राएँ एवं साधक तीव्र बुद्धि वाले हो जाते हैं। कम परिश्रम में ही उन्हें ज्ञान प्राप्त हो जाता है।

दूसरी बात ज्ञान विकाश करने का तरीका यह है कि हम मंदिरों की जिनवाणी को सुरक्षित करें। उन पर वेष्ठन लगायें, गुरुओं को शास्त्रदान दे इससे भी ज्ञान की वृद्धि होती है। बन्धुओं बीच का कुछ ऐसा समय निकला जिस समय अज्ञानता के कारण लोगों ने शास्त्रों की रक्षा नहीं की और हमारे बहुत सारे ग्रंथ इधर-उधर देश विदेशों में चले गये। जापान की लाइवब्रेरी में भारत से गये। २० लाख ग्रंथ हैं जिसमें सबसे अधिक जैन ग्रंथ है। गंधहस्ति महाकाव्य आचार्य समन्तभद्र स्वामी का सबसे बड़ा ग्रंथ है वह भी जापान की लाइवब्रेरी में पहुँचा लेकिन जब हमारे यहाँ के विद्वान वहाँ उसे लेने पहुँचे तो वहाँ ग्रंथ रखने का खण्ड २ बाई २ का स्थान खाली मिला। ग्रंथ वहाँ उपलब्ध नहीं था। खेद है वह ग्रंथ हमें उपलब्ध नहीं हो सका। नालंदा के अंदर आज भी ऐसा स्थान है जहाँ ६ माह तक होली की तरह जिनवाणी जलती रही। सोचिये कितना जैन साहित्य होगा। बन्धुओ! हम अपने घर की साज सज्जा में लाखों रूपये खर्च कर देते हैं लेकिन जिनवाणी पर नया वेष्ठन नहीं लगा पाते हैं। हम इस दिशा में भी कुछ प्रयत्न करें तभी हमारी श्रुत पंचमी सच्चे मायने में सार्थक हो सकेगी।

उत्साह विहीन संगति विषकुंभ

सक्रिय साधकों को उत्साह विहीन व्यक्तियों की संगति को विषकुंभ की तरह त्याग देना चाहिए क्योंकि जो स्वयं उत्साह से रहित है वह न तो खुद उन्नति को प्राप्त करता है, न ही दूसरों की उन्नति में साधक बन पाता है अपितु दूसरों को पतन के गर्त में गिरा देता है उनसे सावधान रहना चाहिए। माध्यस्थ भाव रखना चाहिए। सम्पर्क और प्रोत्साहन नहीं देना चाहिये क्योंकि ऐसे उत्साह विहीन लोगों को प्रोत्साहन देने का तात्पर्य है अपनी उन्नति को अवरुद्ध कर लेना। उत्साह विहीन व्यक्ति ही हमारी एकता संगठन, वात्सल्य आदि सद्गुणों में घुन लगा देते हैं। अत: जो सच्चे साधक होते हैं वे ऐसे उत्साह विहीनों की संगति को दूर से ही त्याग देते हैं। जो ऐसा करते हैं उनका जीवन पतन से बच कर पावन बन सकता है। ऐसे व्यक्ति ही संघ व समाज की एकता संगठन वात्सल्य, अनुशासन व आज्ञा में सहयोगी सिद्ध होते हैं। गुरु का भी उन पर अटूट विश्वास होता है।

सामायोचित शिक्षायें से साभार

वात्सल्य किसमें और कैसा

प. पू.गुरुदेव गणाचार्य विरागसागर जी महामुनिराज

द्वारा पढ़ाई गई मूलाचार की क्लास से....

वात्सल्य के विषय में प.पू. आचार्य समन्तभद्र स्वामी ने कहा है....

स्वयूथ्यन्प्रति सद्भाव सनाथापेतकैतवा।
प्रतिपत्तिर्यथायोग्यं वात्सल्य मिभलप्यते।।

स्वयूथ्य यानी समूह आप संयमी हैं तो संयमी का जितना भी समूह है वह सब स्वयूथ्य हैं किन्तु आज के समय में कतिपय व्यक्तियों ने स्वयूथ्य की परिभाषा को गलत समझलिया है उन्होंने मात्र अपने संघ, अपने गुरु से दीक्षित साधुओं को ही स्वयूथ्य कह दिया है जो की बिल्कुल गलत है। आचार्य समन्तभद्र स्वामी ने इसमें कहीं भी संघ भेद नहीं किये उन्होंने तो संपूर्ण संयमियों के समूह को स्वयूथ्य कहा है। अपना समूह भी स्वयूथ्य है आर तीन कम नौ करोड़ मुनियों का समूह भी स्वयूथ्य है उनके प्रति अच्छे भाव रखना। राग रूप और द्वेषरूप परिणाम नहीं रखना, क्योंकि यदि द्वेष रुप परिणाम रखोगे तो विसंवाद खड़े हो जायेंगे, झगड़े खड़े हो जायेंगे, जिसे देख अन्य लोग कहेंगे इस समूह के लोग लड़ते ही रहते हैं। अत: पहली बात तो ऐसा होना ही नहीं चाहिए कदाचित हो भी जाय तो धैर्य रखना चाहिए समता भाव रखो, अन्यथा गुरु, संघ और धर्म पर छीटें आयेंगे और तुम धर्म की अप्रभावना के बहुत बड़े हेतु बन सकते हो। अत: कटुभाव, विसंवाद परक भाव नहीं होना चाहिए। सद्भाव: में बहुत सारे अर्थ छिपे हैं किन्तु सबसे पहला लक्षण है असद्भाव का त्याग, राग-द्वेष, मोह ईर्ष्या आदि जो असद्भाव हैं वे दूर होना चाहिए। विसंवाद कभी भी समूह, आम जगत के बीच में तो हो ही न, अकेले में भी ऐसा न हो, लेकिन आम लोगों की दृष्टि में तो बिल्कुल लोहे के बन जाना चाहिए। कैसी भी परिस्थिति उपस्थित हो जाए फिर भी कभी जबाव सबाल विसंबाद न करें।

सभी धर्मात्मा स्वस्थ रहें अच्छी चर्या बनायें जिससे अपना और दूसरों का भी भला होता है। व्यवस्थित चर्या बनाना, आहार करना, उठना, बैठना, चलना सब व्यवस्थित तरीके से होना चाहिए इसके लिये भले हमें परिश्रम करना पड़े पर हर कार्य व्यवस्थित हो इत्यादि पवित्र भाव का नाम सद्भाव है यही सच्चा वात्सल्य है। प्राय: वात्सल्य के अभाव में व्यक्ति के बुरे भाव होते हैं यदि आपके धर्म और धर्मात्माओं के विषय में अच्छे भाव हो रहे हैं तो समझना यह वात्सल्य है। सम्यग्दृष्टि यूँ ही सबमें वात्सल्य नहीं रखता। विवेक रहित वात्सल्य, चाहे जिससे प्रीति करने लगे, नहीं जिसमें जितना अधिक धर्म है उसमें उतना अधिक वात्सल्य भाव होना चाहिए। सच्चा धर्मात्मा होना चाहिए मात्र बाहर से ही धर्म न दिखे अंतरंग में भी धर्म हो तभी वह सच्चा धर्मात्मा है ऐसे धर्मात्मा के प्रति अच्छे भाव वात्सल्यभाव होना चाहिए।

सनायापेतकैतवा- कभी कोई महाव्रती अकेला पन महसूस करने लगे हमारा कोई नहीं हैं हम कैसे जीवन जिये तो उसको समझाना, घबराओ नहीं तुम अकेले कहाँ हो, तुम्हारे देव, शास्त्र और गुरु हैं इसलिए तुम अनाथ हो ही नहीं सकते हो, तुम तो सनाथ हो। जिसके देव, शास्त्र, गुरु न हो वे अनाथ होते हैं।

यदि कोई देव, शास्त्र, गुरु से टूट गया है उसकी श्रद्धा डगमगा रही है तो उसे कहना घबराओं नहीं मैं तुम्हें तुम्हारे गुरु से जोड़कर रखूँगा। ध्यान रखना कतिपय व्यक्ति जो स्वयं अनाथ है भटके हैं वे कहने लगते हैं मैं तुम्हारा हूँ, मैं तुम्हारी सेवा करूँगा। यह तो अनाथ को दूसरा अनाथ मिल गया, तो यहाँ सनाथ पना कैसे हो सकता हैं। सनाथ तो वह है जो निश्च्छल भावना से कहे चलो अपने गुरु से क्षमा मांगो कान पकड़ों अब ऐसी गल्ती नहीं करेंगे वह सच्चा सनाथ है और विश्वास है वह दूसरों को भी सनाथ बना सकता है।

अपैत यानी छल, कपट कभी-कभी ऐसे भी छली व्यक्ति आ जाते हे जो बिगड़े के पास आकर उसे और अधिक विगाड़ देते हैं अरे! गुरु नहीं बोलते हैं तो नहीं बोलते दो, क्या करना है हम लोग कहीं अन्य जगह चलेंगे। ऐसे व्यक्तियों से सदैव सावधान रहना चाहिए जो मीठे बनकर तुम्हारे जीवन को बर्वाद कर देगे।

प्रतिपर्तिर्यथायोग्यं इतनी बातों को जाने लेने के बाद जिसके योग्य जितना संभव है उतना वात्सल्य रखना चाहिए। यहाँ यथायोग्य शब्द बड़ा ही महत्वपूर्ण है आप मुनि हो तो मुनि को गले लगाओ क्षुल्लक और ब्रह्मचारी को मत लगा लेना यह आपकी मर्यादा है। आप अपनी चट्ाई पर महाराजों को बिठाओं, आर्यिका है तो आर्यिकाओं को बिठायें यह मर्यादा है। कोई कितना भी ऊँचा आसन लगा दे आप क्षुल्लक हैं तो उतनी सीमा में ही रहना चाहिए। कहीं ऐसा न हो आप मुनि और गुरु की बराबरी करने लगे यह गलत है। कभी कोई मुनिराज ही कहने लगें अरे तुम तो बैठ जाओ तो भी अपना विवेक लगाना चाहिए। किसी के कहने से कार्य नहीं करना चाहिए। कभी गुरु की बराबरी भी किसी को नहीं देना चाहिए। हम श्रद्धावान हैं गुरुकुली हैं तो गुरु से बढ़कर हमारे लिए कोई नहीं हो सकता।

गुरु को संकेत दें और उनके निर्देशन के अनुसार कार्य करें अंजानता की जानकारी दिला दें। विस्मृति की स्मृति दिला दें फिर गुरु ने जो आज्ञा दी वह शिरोधार्य करें। गुरु को कहने की भी जरूरत नहीं रहती गुरु की निगाहों से ही शिष्य समझ जाते हैं कि अमुक साधक को वात्सल्य देना चाहिए की नहीं कितना देना चाहिए। यदि गुरु की दृष्टि थोड़ी सी फिर गई मतलब अभी उसकी गल्ति का सुधार होने दो वात्सल्य देने की जरुरत नहीं है। और जब गल्ति सुधर गई, गुरु की थोड़ी सी निगाह उसकी ओर हुई यानी उसे पर्याप्त वात्सल्य दो, कोई कभी मत करो। इन सभी बातों को समझने वाला ही सच्चा शिष्य होता है। लेकिन कभी कभी ऐसे भी विवेक विहीन लोग होते हैं जो गुरु की दृष्टि को या तो समझ नहीं पाते अथवा देखते ही नहीं, पूछते ही नहीं गुरु का अभिप्राय क्या है और अपनी मनमानी प्रवृत्ति करने लगते हैं कट्रोल करने पर तर्क देते हैं उन्हें कोई सम्हालने वाला नहीं था, वे अकेले थे। अरे! यह भी तो समझ लो वे अकेले क्यों थे इसके पीछे रहस्य क्या था। किसी को फोड़ा हो गया है तो डॉक्टर उसे पोसते नहीं है उसे फोड़ते हैं उस समय यह नहीं देखते कि इसे तकलीफ होगी। यदि ऐसा सोचेंगे तो वह फोड़ा कभी ठीक ही नहीं हो सकता। इसी तरह गुरुजन होते हैं तो वे उसे दूर करने का हर प्रयत्न करते हैं कठोर से कठोर बनकर उसे दूर करते हैं। उस समय शेष शिष्यों का भी कर्तव्य है गुरु के अनुकूल चलें। यदि कोई गुरु के मध्यस्थ होने पर भी उसे प्रोत्साहन देता है तो वह मीठे जहर की तरह है जो हानिकार है संघ के लिए भी और गुरु के लिए भी इसलिए ऐसे लोगों से सावधान रहें। तो इन सभी बातों का ध्यान रखते हुए यथायोग्य वात्सल्य रखना चाहिए तभी यह वात्सल्य अंगह सच्चे मायने में सार्थक हो सकता है।

हमारे अंदर इतना अच्छा वात्सल्य होना चाहिए की देखने वाले व्यक्ति कह उठे कि भिन्न-भिन्न जगह के, भिन्न-भिन्न माता-पिता के सभी लोग यहाँ एक स्थान पर एक ही माँ की सन्तान की तरह ही नहीं उससे भी अच्छे से रहते हैं। लेकिन कहीं ऐसा न हो हम ही एक दूसरे की बुराई करने लगें क्योंकि जो बुराई कर रहा है तो वह वात्सल्य भाव कैसे रख सकता है। एक साथ एक व्यक्ति के प्रति दो कार्य नहीं हो सकते कि इधर उसके विषय में बुराई भी करो, चार लोगो से कहो वह ऐसा है, उसने ऐसा कर दिया और उधर उसी के विषय में वात्सल्य भाव रखो यह अच्छे और सच्चे लोगों के लिए तो संभव नहीं हो सकता क्योंकि अच्छे साधक पहली बात तो बुराई करते नहीं है यदि किसी के अंदर उन्हें बुराई दिखे भी तो उसे ही समझा कर उस बुराई को दूर कराते हैं उसके बाद उसकी अच्छाई की प्रशंसा करते हैं। उसके प्रति वात्सल्य भाव रखते हैं। तो हम सभी सम्यग्दर्शन के इस वात्सल्य अंग को सच्चे मायने में अपने अंदर उतारे तभी हम सच्चे सम्यग्दृष्टि एवं धर्मात्मा कहला सकते हैं।

प.पू. आचार्य रत्न, चर्या चूड़ामणी राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज ससंघ के परिचय फोटो एवं अन्य जानकारी हेतु-

1. **www.ganacharyaviragsagar.com**
2. **Facebook : viragvani**
3. **Email : viragsagarji@gmail.com**
4. **youtube : Ganacharya Viragsagarji**
5. **सं. सूत्र what'sapp no 9009462216**

हमारे सारे प्रयास अंधेरा मिटाने के लिए हैं

आचार्य विनम्रसागर जी

हम अपनी जिन्दगी के सम्पूर्ण क्षणों पर एक नजर डालें तो पता चलेगा कि हम अपने जीवन में उजाला करने के लिए ही जिये थे। ये बात अलग है कि हम अंधेरा मिटाने में रंच मात्र भी सफल न हुए, चारों ओर अंधेरा ही अंधेरा है। अंधेरे में ही हमारा जन्म हुआ है अंधेरे में ही हम जी रहे हैं। पूरे जीवन में सत्य की एक किरण भी पैदा नहीं कर पाये हैं। यह हमारी जड़ता परम्परा अनादि से चली आ रही है। आश्चर्य की बात यह है कि हम अंधेरे में रहना तो पसन्द नहीं करते पर अंधेरे से हमें घबराहट होती है लेकिन फिर भी हम उजालों से दूर भागते हैं अंधेरा अज्ञान ही है। अज्ञान तीन काल में कभी भी पूर्ण नहीं हो सकता है लेकिन ज्ञान पूर्ण हो सकता है केवल ज्ञान की अवस्था में ज्ञान ही पूर्णता हो जाती है हमारे सारे प्रयास उजाला पैदा करने के हैं।

अंधेरे में कई दिन रहें तो घबराहट होती है लेकिन उजाले में एक नहीं कई जिन्दगी गुजारने पर भी घबराहट नहीं होती है उजाला मौत को ही मौत के घाट उतार देता है। अंधेरे में हम बिल्कुल अकेले हैं कोई अपना नजर नहीं आता जिसे अंधेरों में अपना कहा जाता है वह धोखा है और कहने वाला धोखेबाज है। अंधेरे में अपनी छाया भी अपने साथ नहीं होती उजाले में परमात्मा अपने साथ होता है और छाया तो जीवन साथी बनकर अपने साथ चलती है।

यदि हमें अंधेरा मिटाना हो तो किसी ज्ञानी संत के चरणों में जाकर अपना मस्तिष्क माचिस की तीली की तरह रगड़ना पड़ेगा तब कहीं जलती मशाल वाला वह संत तुम्हारे चिराग में ज्योति डाल सकता है। हमें यदि माचिस भी मिल जाये और तीली भी तो भी यदि माचिस सीडी है तो जलने वाली नहीं है। संत के पास जाये बिना किसी भी आदमी का चिराग नहीं जल सकता संत ही हैं जो राग में चिंगारी लगा देते हैं राग को जला देते हैं तो चिराग जल जाता है। हम सभी अपने चिराग में ज्योति पैदा करें तभी हमारा यह मानव जीवन ज्योतिर्मय हो सकता है।

मायाचारी छिपती नहीं

संकलन- आ. विदूषीश्री माता जी

एक बहुत ही सुंदर वन था। जिसमें बहुत ही सुंदर वृक्ष थे उन वृक्षों पर पक्षी रहते थे। उसी जंगल में एक गीदड़ रहता था वह अपने आपको उन पक्षियों के बीच बड़ा मानता था। तथा उसी जंगल से कुछ दूरी पर शिकारी रहते थे। एक बार वह घूमते-घूमते जंगल में शिकारियों के बीच चला गया। लेकिन वहाँ शिकारी नहीं थे। वे कहीं चले गये थे। उस वहाँ एक शेर की खाल मिल गई। वह उसे पहिन कर जंगल की ओर वापिस आ गया। और अपने आपको उन सभी पक्षियों के बीच राजा मान कर अधिकार जमाने लगा। एक बार उसकी इस खाल की पहिचान एक बाज ने कर ली ओर उसने सभी पक्षियों से कहा- चलो, अब हम सभी मिलकर उसे खदेड़ना शुरु करते हैं तथा सभी ने मिलकर उसे खदेड़ना शुर कर दिया और वह दौड़ते-दौड़ते जंगल के बाहर रंगरेज के दरवाजे पर पहुँचा साथ ही पीछे-पीछे सारे पक्षी पहुंच गये। वह परेशान हो गया और रंगरेज के रंग भरे पात्र में गिर कर मर गया। जिससे उसका रहस्य खुल गया। इस प्रकार कभी भी मायाचारी नहीं करना चाहिए। अपने वास्तविक स्वभाव में ही रहना चाहिये। क्योंकि मायाचारी कभी छिपती नहीं है, बल्कि एक न एक दिन प्रकट हो जाती है।

महत्वपूर्ण जानकारी

परम पूज्य गणाचार्य श्री १०८ विरागसागर ससंघ कहाँ विराजमान हैं, जानने के लिए Google अथवा किसी भी इंटरनेट Browser पर जाकर टाईप करें।

Viragsagar.trackerbox.co.in जो Location दिखाएँ उसे बड़ा करके उसके विषय में तथा आस-पास की Location के विषय में जाना जा सकता है।

प्रबन्ध सम्पादक : विरागवाणी

मनुष्य की देह पुदगल परमाणुओं का संकलन है

संकलन- विमर्शसागर जी महाराज

भक्ति आत्मा का स्नान है। देह का स्नान जल से होता है। देह को स्नान कराने से आत्मा स्वच्छ नहीं होती। देह का स्नान परमात्मा की आराधना के लिये होना चाहिए। उद्देश्य के अनुसार भाव निर्मित होते हैं। भावों के अनुसार आत्मा पुण्य -पाप कर्मों को बांधता है। देह की स्वच्छता के लिये स्नान करना पाप है, परमात्मा की आराधना के लिये देह को स्नान कराना पुण्य है। परमात्मा भक्ति से इस लोक में तथा परलोक में सुख की प्राप्ति होती है।

भक्ति आत्मशांति तथा विकल्पमुक्ति का उत्तम उपाय है। भक्ति से मन प्रसन्न होता है, तथा देह के परमाणु विशुद्ध होते हैं। मनुष्य की देह पुद्रल परमाणुओं का संकलन है। प्रभु भक्ति से देह के परमाणु मंत्रित होते हैं। जिससे बीमारियाँ आक्रमण नहीं कर पाती। संतजन परमात्मा भक्ति में संलग्न रहते हैं, जिससे उनकी देह के परमाणु स्वस्थ ऊर्जा को धारण करते हैं। जब भी कोई बीमारी आक्रमण करती है, तो वह शुद्ध परमाणु ऊर्जा उसे ठहरने नहीं देती। इसीलिये साधुजन औषधि का भी प्राय: त्याग कर देते हैं, और परमात्मा भक्ति रूपी औषधि से आत्मा को निर्मल तथा देह को रोग प्रतिरोधी बनाते हैं।

संत के चरणस्पर्श करने से उनकी विशुद्ध ऊर्जा का संचार होता है। जो हमें आत्मशांति प्रदान करते हैं। संत का भक्तिमय जीवन स्वपर कल्याण का हेतु है। परम आनन्द का आधार है। संसार का नाश करने वाला है। भक्ति से आत्म गुणों की प्राप्ति गुणात्मक रूप में होती है। भक्ति का दीप जब तक जलेगा, आलोक बाँटता ही रहेगा। भक्ति का संगीत जब तक बजता रहेगा, आत्मा और मन को शुभ विचारों से पवित्र करता रहेगा।

आत्मोत्कर्ष का आयाम: प्रत्याख्यान

(कृतिकार- आचार्य विशुद्ध सागर जी महाराज)

हे विज्ञात्मन्! प्रतिक्रमण के पश्चात् प्रत्याख्यान का कवच पहिनना अति आवश्यक है। इसीलिए आवश्यक धर्म के अगले चरण में 'प्रत्याख्यान' को कहा है क्योंकि प्रत्याख्यान-बिना शेष-कर्तव्य अधूरे हैं। प्रत्याख्यान का तात्पर्य है- त्याग। लेकिन किसका? गुणों का या अवगुणों का, अच्छाइयों का या बुराइयों का? तो ध्यान रखना, त्याग गुणों का नहीं, अवगुणों का, बुराइयों, गल्तियों का, दोषों का किया जाता है, अर्थात् दोषों का त्याग करना प्रत्याख्यान कहलाता है, यानी पूर्वकृत दोषों का प्रतिक्रमण कर, अनागत दोषों से बचने हेतु प्रत्याख्यान की सीढ़ी पर कदम रखना परम-अनिवार्य है। यह एक महत्वपूर्ण कर्त्तव्य है। मन, वचन, काय और कृत, कारित, अनुमोदन से अर्थात् नव-कोटि से किया गया दोषों का परित्याग ही सच्चा त्याग कहलाता है। कदाचित् साधक के अंदर असंयमरूप भाव प्रस्फुटित हो जाता है तो सच्चे साधक को तत्काल प्रतिक्रमणपूर्वक प्रत्याख्यान कर लेना चाहिए। यदि कोई असंयमरूप वचनों का उपयोग हो गया हो तो शीघ्र ही उन वचनों को त्याग देना चाहिए या शरीर से कोई क्रिया अप्रभावक, असंयमित हो, तो उसे भी शीघ्र छोड़ देना चाहिए। वही ज्ञान सच्चा ज्ञान कहलाता है जिसके माध्यम से अवगुणों के प्रत्याखान की भूमिका अदा हो। आर्ष परम्परा में प्रत्याखान को षट् आवश्यक में स्वीकारा है जबकि स्वाध्याय को तपों में ग्रहण किया है। जैसे- साधक को प्रतिक्षण प्रभु-नाम का पाठ करते रहना चाहिए, उसी प्रकार से प्रतिफल प्रत्याख्यान।

हे साधक! जिस क्षण तू एक स्थान को छोड़ दूसरे स्थान पर बैठता है तो पूर्व स्थान का परित्याग करना अनिवार्य है। तेरे भाव जिस पदार्थ के ग्रहण करने के बार-बार हो रहे हैं तो भो ज्ञानी! उस पदार्थ का त्याग कर दे जो ज्यादा प्रिय हो, उसे ही तू सबसे पहले त्याग कर एवं जिसका सेवन न तू करता है और न तुझे वो पदार्थ मिल ही सकता है, ऐसा पदार्थ का भी प्रत्याख्यान होना चाहिए जिसमें जीव-विघात, अभक्ष्य, अनुपसेव्य आदि की संभावना हो। तो दयालु साधकों को इंद्रिय-लोलुपता को नष्ट करने के लिए एवं अहिंसा धर्म की रक्षा हेतु त्याग कर देना श्रेयस्कर है, क्योंकि प्रत्याख्यान ही आत्मोकर्ष, आत्मोत्थान का चरमोत्कर्ष बिन्दु है, जो भव-सिंधु से तिरा देने में परम सहायक है।

- 'निजात्म तरंगिणी' से साभार

लालच का फल

संकलन- श्रमणी आर्यिका वियोजनाश्री माता जी

एक गाँव में चार भाई रहते थे। उनके पास सैंकड़ों एकड जमीन, आसमान को छूती कई इमारतें, अच्छा खासा बैंक बैलेंस था इसके बावजूद भी सभी लालची थे। वे हर प्रकार का जतन करते कि उन्हें और भी धन कहीं से प्राप्त हो जाए और वे रात-दिन इसी चिंता में लगे रहते थे। एक बार गांव में देश के हर कोने से साधु-महात्मा पधारे। वे (चारों भाई) बारी-बारी से संतों के पास जाते और उनसे धन प्राप्ति के उपाये पूछते। उनका प्रयास रंग लाया और उन्हें एक साधु का पता चल ही गया जो उनकी मनोकामना पूरी कर सकते थे। अब उनकी प्रसन्नता देखते ही बनती थी। अब वे नियमित रूप से उस साधु की सेवा में उपस्थित होते। उनकी सेवा सुश्रुषा करते और उन्हें प्रसन्न करने की चेष्टा करते। साधु ने प्रसन्न होते हुए उनसे पूछा कि वे क्या चाहते हैं। सभी ने अपना मनोरथ कह सुनाया। साधु इस बात को समझ गए थे कि इतना सब कुछ होते हुए भी उनके मन में धन के प्रति ज्यादा आसक्ति है। उन्होंने चेतावनी देते हुए बतलाया कि उन्हें धन तो मिल जाएगा लेकिन ज्यादा लालच करने से अहित भी हो सकता है। उन्होंने साधु को आश्वासन दिया कि आपकी सीख का पालन करेंगे।

साधु ने बतलाया कि आप लोग पूर्व दिशा की ओर जाएँ। वहाँ आपको रास्ते में चार पहाड़ मिलेंगे। पहाड़ में गुफा मिलेगी। उसमें प्रवेश करके खुदाई करना, तुम्हें धन अवश्य मिलेगा। चारों ने रास्ते में खाने-पीने का समान अपने साथ लिया और निकल पड़े, चलते-चलते एक पहाड़ मिला। यहाँ वहाँ भटकने के बाद उन्होंने गुफा दिखलाई दी। गुफा के अंदर जाने के बाद उन्होंने एक स्थान पर खुदाई की। जमीन में तांबा प्राप्त हुआ। सबसे छोटे भाई ने कहा- भैया में इसी में सतुष्ट हूँ। इतना कह कर वह वहीं रूक गया। बड़े ने समझाया कि आगे और भी कीमती चीजें मिल सकती हैं। यदि तू यही रूक जाना चाहता हैं तो ठीक है। इतना कहकर तीन भाई आगे बढ़े।

चलते-चलते दूसरा पहाड़ मिला और गुफा भी। तीनों ने अंदर प्रवेश किया। खुदाई शुरु की। वहाँ चांदी प्राप्त हुई। दूसरे भाई ने अपने बड़े भाई से कहा कि वह इसी से संतुष्ट हैं। बड़े भाई ने कहा- जैसी तुम्हारी मर्जी। हम और आगे जा रहे हैं।

अब दो भाई आगे बढ़। चलते-चलते फिर एक पहाड़ मिला और उसमें बनी गुफा भी। दोनों ने अंदर प्रवेश किया और खुदाई शुरु की। इस बार संयोग से सोने के ढेर मिले। तीसरे भाई ने कहा- भैया तांबा और चाँदी से तो सोना ठीक रहेगा। बस हम आगे नहीं बढ़ेंगे। अपने मंझले भाई की बात सुनकर बड़ा ठहाका मार कर हंसा फिर बोला, ठीक हैं छोटे तुम यहीं रूको। मैं आगे बढ़ता हूँ। छोटे भाई ने समझाया भी कि इतना ही पर्याप्त है। ज्यादा लोभ अब ठीक नहीं। लेकिन बड़ा मानने से इंकार करते हुए आगे बढ़ गया। काफी दूर जाने के बाद एक पहाड़ मिला और गुफा भी। बड़े भाई ने अंदर प्रवेश किया और खुदाई शुरु की। उसे वहाँ हीरा,मोती, पन्ना आदि का अमूल्य जखीरा मिला। मन ही मन प्रसन्न होते हुए उसने सोचा कि तीनों भाई भी उसके साथ होते तो उन्हें भी नायाब खजाना हाथ लगता, लेकिन जिसके भाग्य में जो लिखा -वदा होता है मिलता है।

बहुत सारा असबाब इकट्ठा कर जब वह गुफा के मुहाने पर पहुंचा तो देखा क्या है कि गुफा का प्रवेश द्वार बंद हो चुका है। वह खूब रोया-चिल्लाया लेकिन द्वार नहीं खुला। तभी अंदर से एक आवाज गूँजी- ज्यादा लोभ का परिणाम तो तुम्हें भुगतना ही पड़ेगा। अत: जितना मिले उसमें संतुष्ट रहें अधिक लोभ नहीं करें अन्यथा ऐसी ही दुर्दशा हो सकती है।

विज्ञापन दर

रंगीन - फुल पृष्ठ	-	11000/-	**ब्लेक एण्ड व्हाईट - फुल पृष्ठ**	-	5000/-
रंगीन - हॉफ पृष्ठ	-	6000/-	**ब्लेक एण्ड व्हाईट - हॉफ पृष्ठ**	-	2500/-
रंगीन - चौथाई पृष्ठ	-	3000/-	**ब्लेक एण्ड व्हाईट - चौथाई पृष्ठ**	-	1500/-

'विरागवाणी' मासिक पत्रिका की सदस्यता एवं विज्ञापन हेतु संपर्क करें-

प्रबंध सम्पादक : श्री अनूप कुमार जैन

जी-१४१ गौतम नगर, भोपाल-२३ ☎: 0755-2789703, मो.9425016879

भोजन कैसे करें

संकलन- श्रमणी आर्यिका विसंयोजनाश्री माता जी

भोजन के बाद किसी प्रकार से मस्तिष्क पर जोर पड़ने वाला अध्ययन लगभग आधे घंटे तक नहीं करना चाहिए और वज्रासन से लगभग १० मिनिट बैठना चाहिए। फिर दाँये, सीधे और बायें करवट से क्रमशः ८, १६, ३२ श्वासोच्छवास के समय तक लेटना चाहिए। जिससे मस्तिष्क तक खून आसानी से पहुँच जाता है, रुका हुआ मल ढीला होता है, भोजन अच्छा पचता है और ब्लड सरकुलेशन अच्छा होता है।

भोजन स्वाद की दृष्टि से न करके स्वास्थ्य की दृष्टि से हित, मित, मिष्ठ अर्थात् हितकारी और आवश्यकतानुसार ही करना चाहिए। भोजन करने से पूर्व स्थान, वर्तन और भोज्य पदार्थों का अच्छे ढंग से अवलोकन कर लेना चाहिए। व्यक्ति के मुख में ३२ दांत होते हैं जो संकेत देते हैं कि मुख में डाली हुई वस्तु को ३२ बार चबाकर निगलना चाहिए। यदि ऐसा नहीं किया जाता है तो पाचक रस और लार आदि भोजन में न मिलने से पाचन ठीक ढंग से नहीं हो पाता है। भोजन में स्थित शर्करा लार के बिना नहीं पचती हैं, आंतें जल्दी खराब हो जाती है, चर्बी बढ़ जाती है, किडनी खराब हो जाती है इत्यादि अनेक प्रकार के रोगों की संभावना बढ़ जाती हैं।

अन्याय पूर्वक कमाये गये धन से तैयार किया गया भोजन धर्म, कर्म, आस्था, न्याय, नीति, सदाचरण आदि से दूर करता है और ईमानदारी से प्राप्त भोजन धर्म-कर्म आदि शुभ भावना से जोड़ता है अतः अन्यायी का भोजन नहीं करना चाहिए। अन्याय पूर्वक कमायें गये धन से बना भोजन अहिंसक नहीं माना जा सकता और उससे बुद्धि निर्मल नहीं हो सकती।

भोजन की आसक्ति क्रोध पैदा करती है आसक्ति मन से उत्पन्न होती है अतः मन के वशीभूत होकर आवश्यकता से ज्यादा नहीं खाना चाहिए। किसी ने कहा भी है-

तन की भूख तनक सी, तीन पाव या सेर।
मन की भूख अपार है लीलन चाहे सुमेर।।

त्यागी तपस्वियों को आहार दान देकर प्रेम, वात्सल्य, धर्म भावना आत्मशांति एवं ब्रह्मचर्य की भावना और शरीर चलाने की दृष्टि से भोजन ग्रहण करना चाहिए।

भोजन करने से पूर्व एवं बाद में पंच परमेष्ठी (इष्टदेवता) का ९ बार स्मरण करना चाहिए। इसका प्रयोजन यह है कि भोजन से छूटकारा मिले, परिणामों में स्वच्छता न जगे, इस आहार की और आसक्ति न जगे एवं इसमें जो हिंसा हुई हो उसके प्रायश्चित स्वरूप मैं ९ बार महामंत्र का स्मरण करता हूँ।

ईश्वर की...

ब्र. राजकुमार जैन, मधुवन

दिसम्बर का महीना था। दस साल का एक छोटा सा लड़का सर्दी में कांपता हुए नंगे पैर एक जूते की दुकान के अन्दर खिड़की से झांक रहा था। इतने में एक महिला उसके पास आई और बोली, खिड़की के अन्दर इतनी उत्सुकता से क्यों देख रहे हो? ईश्वर से प्रार्थना कर रहा हूँ कि मुझे एक जोड़ी जूता मिल जाए। बच्चे ने कहा- महिला ने बच्चे का हाथ पकड़ा और उसे दुकान के अन्दर ले गई। उसने दुकान दार से कहा कि बच्चे के लिए जूता व छह जोड़ी मौजे दीजिए। फिर उसने दुकानदार से पानी का भरा बर्तन और तौलिया मंगवाया। बड़े प्यार के साथ उसने नीचे बैठकर बच्चे के पैरों को धोया और तौलिये से पौछा। उसने बच्चे को नये मौजा का जोड़ा और जूता पहचाना। बाकी के मौजे पैक करवाकर उसे दे दिये। दुकान से बाहर आकर उसने बच्चे के सिर पर हाथ फेरकर पूछा, खुश हो? बच्चे की आंख में आंसू थे, जैसे ही वह जाने के लिए मुड़ी बच्चा उसे आश्चर्य भरी निगाहों से देखते हुए पूछ बैठा- क्या आप भगवान का रूप है? सबक- अच्छे काम का दूसरा नाम ईश्वर है।

दुर्जन संगति का परिणाम

श्रमणी आर्यिका विसुव्रताश्री माता जी

एक हंस और एक कौवे में एक बार अच्छी दोस्ती हो गई। गगन विहरण करते हुए दोनों एक वृक्ष पर जा बैठे। प्रेमपूर्वक दोनों बाते करने लगे। किन्तु स्वभाव से दोनों अलग-अलग थे। हंस की गति विधियाँ सज्जन जैसी और कौवे की दुर्जन जैसी थी। अचानक उसी वृक्ष की शीतल छाया में विश्राम लेने के लिए थका हुआ। एक मुसाफिर आया। वह अपनी चादर बिछाकर सो गया। शांत स्थान होने के कारण सहसा गहरी नींद आ गई। वृक्ष पर बैठे हुए हंस ने देखा कि पथिक के बदन पर सूर्य की कुछ किरणें पड़ रही है। तीव्र ताप के कारण इसकी नींद टूट जायेगी। इस कारण हंस अपनी पांखे फैलाकर बैठ गया। सारी धूप उसके पंखों पर समाहित हो गई। यह बात कौवे को अच्छी नहीं लगी। उसने सोचा हंस बिल्कुल भोला है। पथिक की चिंता में खुद कितना ताप सह रहा है। पथिक को आराम क्यों देता है? उसके सुख को पचा नहीं सकने के कारण कौवे ने मुसाफिर के मुख पर विष्टा कर दी।

पथिक की आँखे खुली। सोचा यह दुश्मन कौन? पंख फैलाए हुए है। हंस को देखते ही वह आग बबूला हो गया। मलकर्ता उसी हंस को समझकर उसने गोली से उसके प्राण पखेरु उड़ा दिये। दुर्जन के संग से हंस को बिना मौत मरना पड़ा। दुर्जन का संग कभी भी सुख प्रद नहीं होता। दुर्जन संगति अपने पास आने वाले व्यक्ति को भी दुर्जनता ही प्रदान करती है। जैसे काली कोठरी में जाने से कहीं न कहीं काजल लग ही जाता है वैसे ही दुर्जन संगति में जाने, रहने से कोई न कोई दुर्गुण आ ही जाता है। अथवा सज्जन को भी दुर्जन की दोस्ती दुर्जनता ही प्रदान करती है। इसलिए सज्जन पुरुषों को सदैव दुर्जन संगति से दूर रहना चाहिए। सभी उनका जीवन सुरक्षित रह सकता है।

शुचिमय सरितो

आ. श्री १०८ विशुद्धसागर जी

अनेकांत-स्याद्वाद
का फेन उठ रहा
अहिंसा व चारित्र का
कल-कल नाद हो रहा।
ऐसी पावन निर्मल
शुचिमय सरिता है
अर्हत् प्रवचन की,
जिसमें
करते है अवगाहन
भव्य ही।
मोक्ष भवन का
प्रथम सोपान-
सम्यक्त्व महान,
जिसके प्रभाव से
अधवान भी बने भगवान।
जिसने
शुद्ध सम्यक्त्व को
प्राप्त किया
उसने
मिथ्या अघ का
नाश किया।

आवश्यक सूचना

आजीवन (ग्यारह वर्षीय) एवं त्रिवर्षीय सदस्यों को सूचित किया जाता है कि आपकी सदस्यता अवधि समाप्त हो गई है या होनेवाली है। अतः सदस्यता नवीनीकरण करा लें जिससे पत्रिका निरन्तर भेजी जा सके।

प्रबन्ध सम्पादक : विरागवाणी

प्राणायाम की प्रक्रिया

श्रमणी आर्यिका पुनीत चैतन्यमति माता जी
(संघस्थ- स्थविराचार्य संभवसागर जी महाराज)

पंच प्राण माने ५ प्रकार की वायु शरीर में है- **१. प्राणवायु**- शरीर में कण्ठ से हृदय पर्यन्त जो वायु काम करता है उसे 'प्राणवायु' कहा जाता है। फल-नासिका मार्ग कण्ठ स्वर-तन्त्र, वाक्-इन्द्रिय, अन्न नलिका, श्वास तन्त्र, फेफड़ों एवं हृदय को क्रिया शीलता तथा शक्ति प्रदान करता है।

२. अपानवायु- नाभि के नीचे से पैर के अंगुठे पर्यन्त की प्राण कार्य शील रहता है उसे अपानवायु प्राण कहते हैं।

३. उदानवायु- कण्ठ से ऊपर से सिर पर्यन्त देह में अवस्थित प्राण को उदान वायु कहते है- फल-कण्ठ से ऊपर शरीर के समस्त अंगों नेत्रों नासिका एवं सम्पूर्ण मुखमण्डल को ऊर्जा और आभा प्रदान करता है।

४. समानवायु- हृदय के नीचे से नाभि पर्यन्त शरीर में क्रियाशील वायु को समान वायु कहते- फल यकृत आंत प्लीहा एवं अंगन्यास सहित सम्पूर्ण याचन तन्त्र की आन्तरिक कार्य प्रणाली को नियन्त्रित करता है।

५. व्यानवायु- यह जीवन प्राण शक्ति पूरे शरीर में व्याप्त है। शरीर की समस्त गति विधियों को नियमित तथा नियन्त्रिण करती है। सभी अंगों मांस-पेशियों तन्तुओं सन्धियों एंव नाडियों को क्रिया शीलता, ऊर्जा एवं शक्ति यही व्यान प्राण प्रदान करता है। जो वायु श्वास लेने पर बाहर से शरीर के अन्दर फेफड़ों में पहुचाती है उसे श्वास और श्वास बाहर छोड़ने पर जो वायु भीतर से बाहर निकलती है, उसे प्रच्छश्वास कहते हैं प्राणायाम करने के लिये श्वास अन्दर लेना पूरक श्वास को अन्दर रोके रखना 'कुम्भक' तथा श्वास को बाहर छोड़ना रेचक कहलाता है। श्वास को बाहर ही रोके रखने को वाह्य कुम्भक कहते हैं इस प्रकार प्राणायाम करने के लिये पूरक कुम्भक रेचक और बाह्य कुम्भक क्रियाएँ की जाती है।

प्राण का आयाम (नियन्त्रण) ही प्राणायाम है। प्रतिक्षण जीवन और मृत्यु का जो अटूट सम्बन्ध मनुष्य के साथ है वही ही प्राण के संयोग से ही है।

जैसे अग्नि आदि में तपाने से सुवर्णादि धातुएँ के मल विकार नष्ट हो जाते हैं वैसे ही प्राणायाम से इन्द्रियों एवं मन के दोष दूर होते हैं।

योगासनों से इस स्थूल शरीर की विकृतियों को दूर करते हैं। सूक्ष्म शरीर पर योगासन की अपेक्षा प्राणायाम का विशेष प्रभाव होता है। प्राणायाम से सूक्ष्म स्थूल दोनों शरीर पर विशेष प्रभाव पड़ता है।

हमारे शरीर में फेफड़ों हृदय एवं मस्तिष्क का एक महत्व विशेष होता है और इन तीनों का एक दूसरे के स्वास्थ्य से घनिष्ठ सम्बन्ध भी है।

नोट : (अगले अंक में देखें).....

हँसते रहो हँसाने के लिए

1. **रीता**- मेरी शादी में यूरोप बैंड आया था।
   गीता - मेरी शादी में इंडियन बैंड आया था।
   मीता - मेरी शादी में बस हसबैंड आया था।
2. **चोर** - सर, मैंने चोरी नहीं की।
   जज- प्रमाण क्या है?
   चोर - घर में रखा है।
   जज - ले आओ।
   चोर- अब तक तो गुम गया होगा।
   जज - बहाना बनाते हो।
   चोर - नहीं, (जाली) प्रमाण बनाता हूँ।
3. **ज्योतिषी** - मैं उम्र बताता हूँ।
   व्यक्ति - मेरी उम्र?
   ज्योतिषी - 80 वर्ष
   व्यक्ति - कैसे जाना?
   ज्योतिषी - बुढ़ापा देखकर।

कु. आरजू जैन, भुवनेश्वर

विरागाष्टकम्

समस्त भक्तनन्दनं, ह्रदम्बुजैक मौदनम्
प्रसन्न भानुशोभनं, नमामि साधु गौरवम्
निकाम काम दायकं, द्रगन्त चारु साथकम्
श्री कुन्द गीता गायकं, नमामि गण नायकम्।। १।।
सुखाकरं दयाकरं, गुणाकरं कृपाकरम्
समस्त भक्तवत्सलं, नमामि श्यामा नन्दनम्
रत्नत्रयस्य धारकं, सकल राष्ट्र गौरवम
संघस्थ साधु भूषणं, वन्दे विराग सागरम्।। २।।
उपसर्ग गर्व मोचक, कषाय मानदारकम्
समस्त पुण्य पोषकं, नमामि पद्म लोचनम्।
वृत्तारविन्द मूधरं स्मितालोक सुन्दरम्
मोहादि काम दारणं नमामि वाणी भूषणम्।। ३।।
सदैव पाद पंकज मदीयमानसे निजम्
समस्त पाप नाशकं नमामि धर्म धारकम्
समस्त दोष शोषकं समस्त लोक पोषकम्
श्रमण भक्त वत्सलं नमामि कर्पूर बालकम्।। ४।।
यजे प्रजैक मण्डनम् समस्त पाप खण्डनम्
भक्त चित्त रञ्जकं सदैव धर्म वर्धकम्
मयूर पिच्छी हस्तकं कराग्रे च कमण्डलम्
अष्ट कर्म दारणम् नमामि सन्त गौरवम्।। ५।।
निजात्म ज्ञान धारक स्वयं सुतत्व पोषकम्
जिनेन्द्र गुण गायकं, नमामि साधु नायकम्
यत्तिसु युग प्रवर्तक, मुनिसु गण नायकम्।
सर्वत्र भक्त पूजितं नमामि पदाति चारिणम्।। ६।।
विशुद्ध ज्ञानदायकं विनम्र वाणी भूषणम्
निर्वस्त्र देह भूषित नमामि तं दिगम्बरम्
किशोर क्रांति राजितं, विमल गुरु दीक्षितम्
सुशिष्य मुक्तिकारकं, नमामि ज्ञान गौरवम्।। ७।।
वैराग्य चर्या जीवन, स्वपाद तीर्थ वन्दनम्।
आहार हस्त पात्रकम्, नमामि मोक्ष साधकम्
समाधि तत्व साधक, अध्यातम पद प्रदर्शक्रम्
लोकेश दृदि विराजितं, नमामि राष्ट्र गौरवम्।। ८।।
सदाचेतन्य चिन्तकं नवीन तत्व साधकं
नमामि धर्म मास्करं नमामि युग प्रवर्तकम्
विभव विशुद्ध पोषकं, विनम्र विमाव सूरिदं
विनिश्चय विशाद तारकं, नमामि ज्ञान गौरवम्।। ९।।

नमनकर्ता- पं. श्री लोकेश जैन
(संस्कृत प्रवक्ता एवं शिक्षक प्रशिसक)
गनोड़ा, बांसवाडा, राजस्थान

हे गुरुवर मेरे नायक हो

हे गुरुवर मेरे नायक हो, तुम जग को सदा जगाते हो।
कल्याण कर रहे जीवों का, सन्मार्ग स्वयं तुम वताते हो।।
धन्य हो गयी धरा यहाँ की,
धन्य हुआ यह भारत देश।
यहाँ जन्म हुआ हे गुरुवर,
रक्खा है अत: दिगम्बर भेष।।
जहाँ चरण तुम्हारे पढ़ते है, प्रवचन को देकर समझाते हो।
हे गुरुवर मेरे नायक हो, तुम जग को सदा जगाते हो।।
परिणाम तुम्हारे सुन्दर है,
तुम रत्नत्रय के धारी हो।
तुम अंतर ज्ञान बताते हो,
महिमा गुरु तेरी न्यारी है।।
तेरे चरणों का दास हूँ मैं, तुम आत्म ज्ञान वताते हो।
हे गुरुवर मेरे नायक हो, तुम जग को सदा जगाते हो।
जीवन यह बड़ा अमूलिक है,
क्षण क्षण यह नर भव का पाया।
यह बडे पुन्य से प्राप्त किया,
पायी है धर्म की शुभ माया।।
पायी है गुरु ने रत्न निधि, महिमा यह धर्म की गाते हो।
हे गुरुवर मेरे नायक हो, तुम जग को सदा जगाते हो।
गुरुवर मेरा कल्याण करो,
हम चरण शरण में आये है।
दो संयम जीवन में हमको,
तुम सा यह गुरुवर पाये हो।।
गा रहा गीत यह 'करुणा' तेरा, तुम धर्म सुधा वरसाते हो।
हे गुरुवर मेरे नायक हो, तुम जग को सदा जगाते हो।

रच. कांति कुमार जैन 'करुण' खिमलासा

विरागसागर नाम हमें अब प्राणों से भी प्यारा हैं

पं. वीरेन्द्र जैन,(वीरू)

सुरनर किन्नर इंद्र फणीन्द्र गणीन्द्र सभी यश गाते हैं,
चरम साधना निस्पृहता लख वे सब नत हो जाते हैं।
नमोस्तु-नमोस्तु करता झूम रहा जग सारा है,
विराग सागर नाम हमें अब प्राणों से भी प्यारा है।।

इस जग का वह मोहजाल जो तुम्हें तनिक न छू पाया,
जीवन का सही अर्थ जानकर आर्ष मार्ग को अपनाया।
उस सागर का कौन पिए जल जिसका पानी खारा है,
विराग सागर नाम हमें अब प्राणों से भी प्यारा है।।

आत्मज्ञान की तृप्ति पाने गुरुवर ने घर छोड़ा है,
तीनों योग को एकरूप कर मुक्ति मार्ग में मोड़ा है।
संयम पाकर बना ये जीवन अद्भूत और निराला है,
विराग सागर नाम हमें अब प्राणों से भी प्यारा है।।

विषयवासना भोग विलासा राग द्वेष से दूर हो तुम,
आत्मसात किया तत्वज्ञान को इससे ही भरपूर हो तुम।
गुरु शिक्षा का पाठ आपने निज जीवन में उतारा है,
विराग सागर नाम हमें अब प्राणों से भी प्यारा है।।

महावीर के वचनों को जो जग में फैलाते अविराम,
गुरु की यही है मनोकामना सब जन पहुंचे शिवपुरधाम।
बीच भंवर में फंस मत जाना बस थोड़ी दूर किनारा है,
विराग सागर नाम हमें अब प्राणों से भी प्यारा है।।

तीनों सम्यक् रतन को लेके बढ़ गये हैं मुक्ति की ओर,
धन्य धन्य कहता जग सारा नाच रहा है मन का मोर।
इस धरती से उस अंबर तक गूंज रहा एक नारा है,
विराग सागर नाम हमें अब प्राणों से भी प्यारा है।।

शब्द नहीं है गुणगाने को तुम अतुलित गुणधारी हो,
जल तै भिन्न कमल के सम हो गुरु विशुद्ध अविकारी हो।
जीवन उसका सफल है जिसके भावो में संशारा है,
विराग सागर नाम हमें अब प्राणों से भी प्यारा है।।

दीक्षा देकर भक्तिजनों को तार रहे हैं जे गुरुवर,
कर्म दावानल से झुलसे जो उनको कर देते सुखतर।
इस अंधकूप से हमें उवारो यहाँ घोर अंधियारा है,
विराग सागर नाम हमें अब प्राणों से भी प्यारा है।।

विनयांजलि-

अब क्या करूँगा

मोनू जैन, कटक

परम पूज्य राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री १०८ विरागसागर जी महाराज जितने ज्ञानी, प्रभावी व महान संत हैं उतने ही सरल, वात्सल्य स्वभावी हैं। जबसे पूज्य आचार्य भगवन् का ओडीसा प्रदेश में प्रवेश हुआ तभी से मैं अनवरत उनका सान्निध्य प्राप्त कर रहा हूँ। यहाँ तक की संपूर्ण कटक, भुवनेश्वर प्रवास, विहार एवं हर कार्यक्रम में मैं उपस्थित रहा। प्रारंभ में मुझे बहुत डर लगता था लेकिन जैसे -जैसे आचार्य श्री के करीब आता गया वैसे-वैसे अन्दर के सारे डर दूर हो गये। अब मात्र इतना डर लगता है कि मुझसे कोई गलती न हो जाये। साथ ही मेरा मन अब पूरी तरह साधु संगति से प्रभावित हो चुका है। अब तो आचार्य श्री ससंघ के विहार की चर्चा सुन घबराहट होती है। इतने दिन आचार्य भगवन के सान्निध्य में रहा घर व विजनेश से जब भी समय मिलता वह सारा समय आचार्य श्री के पास व्यतीत होता था लेकिन अब क्या करूँगा कैसे समय निकालूँगा। अंत में आचार्य भगवन के चरणों में नमोस्तु करते हुए प्रार्थना करता हूँ हम छोटे भक्तों पर फिर से अपनी दया दृष्टि डालना।

चिरस्थाई एवं अविस्मरणीय रहेगा

सौरभ जैन, भुवनेश्वर

हमारा जन्म खण्डगिरि, उदयगिरि अर्थात् भुवनेश्वर में ही हुआ है। अनेकों पुस्तकें एवं कई लोगों से हमने यहाँ का इतिहास सुनना चाहा लेकिन फिर भी अंगोपांग इतिहास प्राप्त नहीं हो सका। अनेकों शोधकर्ताओं ने खारवेल के शिला लेख का अर्थ किया लेकिन वह भी यथार्थ नहीं हो सकता।

जब पूज्य गुरुदेव ने खण्डगिरि उदयगिरि पर्वत की वंदना की और यहाँ के इतिहास को टटोला तो यहाँ का खाश इतिहास प्राप्त नहीं हो सका। किसी पुस्तक में कुछ किसी में कुछ आधा अधूरे अर्थ ही पुस्तकों से प्राप्त हुए जिनका अन्वेशरण कर पूज्य गुरुदेव ने खारवेल के लिये गये शिलालेख का शब्दसः यथार्थ अर्थ किया साथ ही अन्य-अन्य गुफाओं में लिखी प्रशस्तियों को खोजकर प्रत्येक गुफा का नाम परिचय तैयार किया पर्वत का प्राचीन नाम वहाँ से सिद्ध पुरुषों की गणना, वहाँ समय-समय पर होने वाले राजा एवं कलिंगजिन के सम्पूर्ण सटीक इतिहास की रचना कर पूज्य आचार्यभगवन् ने जन-जन को इस क्षेत्र से अवगत कराने का भर्सक प्रयत्न किया। अधिक क्या कहें आज तक हम लोग एवं जो भी साधुसंत यहाँ आये उनमें से पू. गुरुवर ने इस क्षेत्र के विषय में जितनी मेहनत की उतनी अन्य किसी ने भी नहीं की, पूज्य गुरुदेव के द्वारा किया गया। यह कार्य युगों-युगों तक चिरस्थाई एवं अविस्मरणीय रहेगा। अंत में गुरुदेव के श्री चरणों में नमोस्तु।

असाधारण विशेषताएँ

अजय जैन, कटक

मैंने कभी साधुओं की संगति प्राप्त नहीं की भुवनेश्वर में आज तक अनेकों साधु आये लेकिन मुझे किसी से लगाव नहीं हुआ। मेरी पत्नी वैष्णु अग्रवाल हैं अभी तक उसे भी धर्म से ज्यादा रुचि नहीं थी लेकिन जब से हम लोगों ने परम पूज्य गणाचार्य गुरुवर के संघ को देखा तो उनकी कठोर त्याग तपस्या ने मेरे मन को झकझोर दिया। इतनी भीषण गर्मी में बिना पंखा, ए.सी., कूलर के रहना, इतना बड़ा संघ होने पर भी कभी संघ में कोई गाड़ी आदि नहीं रखना, भरी गर्मी एवं सर्दी में विहार करना, इतने बड़े संघ का संचालन करने पर भी कभी चेहरे पर क्रोध की शिकन नहीं आना, समाज के हर किस्म के लोगों को एकमात्र वात्सल्य से टेकल करना किसी भी परिस्थिति में अपनी आगमिक चर्या में ढील नहीं करना आदि अनेक असाधारण विशेषाताएँ पूज्य गुरुदेव में मैंने प्रत्यक्ष देखी हैं यही कारण है मैं और मेरी पत्नि दोनों ही आचार्य श्री से अत्यंत प्रभावित हो गये हैं। हम लोगों ने गुरुदेव को गुरु बनाकर अपने जीवन की नैया उनके हाथों सौंप दी है। वर्तमान में हम घर में जरूर हैं लेकिन हमारा मन गुरुदेव के चरणों में ही लीन रहता है। मैं जब अपने पुराने जीवन के विषय में सोचता हूँ तो आश्चर्य होता है कि अचानक ये बदलाव जीवन में परिवर्तन आ कैसे गया इसे मैं एकमात्र गुरुदेव का ही चमत्कार मानता हूँ।

रक्षा की भीख मागता हूँ

मनोज कुमार जैन, कटक

हमने अपने जीवन में प्रथम बार आहार दिया है वह भी आचार्य भगवन् के कहने पर हम लोग उनमें से हैं जो कि साधु-संतों, व नियम संयम से बहुत दूर रहते हैं, फिर भी आचार्य श्री की सरलता से प्रभावित हो हमने आचार्य भगवन व संपूर्ण संघ को आहार दान देने का सौभाग्य प्राप्त किया। मेरा यह बहुत बड़ा पुण्य रहा कि गुरुदेव ने मुझे पूरे आहार में अपने पास खड़े रहने का अवसर दिया।

यद्यपि आचार्य संघ से हम लोग इतने घुलमिल गये हैं कि उनका विहार हो ऐसा नहीं चाहते किन्तु संतों को कौन रोक सका है फिर भी मैं पूज्य गुरुदेव से ओड़िसा बासियों की रक्षा की भीख मांगता हूँ कि गुरुदेव आप यदि ओडिसा में कुछ दिन और रहेंगे तो आने वाले तूफान जैसी विपत्ति से हमारी रक्षा हो सकेगी। आपकी जन्म जयंति खण्डगिरि में ही मने ऐसा हम सभी चाहते थे लेकिन आपने विहार कर दिया। आप जैसा निस्पृही संत मैंने आज तक नहीं देखा कि सिटी शहर को छोड़ जिनकी जंगल (वनखण्ड) में जन्म जयंति मनाई जा रही हो।

तेजोमय प्रभाव

मनोज मंगल, कटक

परम पूज्य राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री १०८ विरागसागर जी महाराज विशाल संघ सहित खण्डगिरि-उदयगिरि सिद्धक्षेत्र पर तपोपासना में लीन रहे ये हमारे लिये बड़े गर्व की बात है। यह तो हमारा परम सौभाग्य रहा कि गुरुदेव ने हमे इतना समय दिया लेकिन इस समय में हमें जो सेवा भक्ति करनी चाहिए थी वो हम नहीं कर पाये ये हमारी बहुत बड़ी कमी रही। गुरुदेव के पूर्व यहाँ आचार्य महाश्रमण का संघ रहा, उन्होंने भी यहाँ साधना की लेकिन पूज्य गुरुवर विरागसागर जी महाराज की त्याग-तपस्या अपने आपमें अनूँठी है आपने खण्डगिरि उदयगिरि के जिन-जिन गुफा शिलाओं में बैठकर ध्यान, स्वाध्याय किया है वे प्रदेश बड़े ही महत्वपूर्ण एवं दर्शनीयता को प्राप्त हो गये हैं। यद्यपि हम लोग जन्म से यहाँ रहे हैं खेले हैं कई बार इन गुफा शिलाओं को देखा है लेकिन आपके बैठने ध्यान-साधना करने पर वे जितनी आकर्षक, सुन्दर एवं शोभनीय प्रतीत हुई हैं उतनी पहले कभी नहीं लगी। निश्चित ही यह आपके पावन पवित्र आभा मण्डल का ही तेजोमय प्रभाव है अंत में आपके चरण हमारी इस धरती को पुनः पवित्र करें ऐसी भावना के साथ आपके श्री चरणों में नमोस्तु-३।

शांत हुआ भयानक तूफान

दिलीप जैन, कटक

संतो के आशीर्वाद से तकदीर ही क्या तद्वीर और तस्वीर भी बदल जाती है उनकी निष्काम उपासना से जटिल से जटिल कर्मबंधन गुरु की आवाज सुन चंदन के वृक्ष से लिपटे विषधरों की तरह क्षणभर में शिथिल पड़ जाते हैं। उनकी साधना के सामने स्वर्ग के देव भी नतमस्तक हो जाते हैं तो ऐसा कौन कार्य है जो न हो सके अर्थात् सभी कार्य उनके आशीर्वाद से बन जाते हैं।

२ मई पूज्य गुरुदेव की जन्म जयंति के अवसर पर ओड़ीसा में आनेवाले फोनी चक्रवाक नामक महाभयानक तूफान में ओडीसा बासियों की क्षति न हो सभी प्राणियों की रक्षा हो ऐसी श्रावकों की ओर से पूज्य गुरुदेव के चरणों में प्रार्थना की गई। पूज्य गुरुदेव ने भी तत्क्षण अपने दोनों हाथ उठाकर आशीर्वाद देते हुए सभी को अभय का आश्वासन दिया।

३ मई का वह दिन जिस दिन भयानक तूफान प्रारंभ हुआ अनेकों वृक्ष स्वतः ही टूट-टूटकर जमीन पर गिर रहे थे। घर से बाहर कदम रखते ही लोगों को उड़ने की आशंका होने लगती थी। चारों दिशाओं में यत्र-तत्र से उड़-उड़कर आने वाली अनेकों वस्तुएँ दृष्टि गोचर हो रही थी। जो जहाँ था वहाँ से बाहर निकलना कठिन था। शांय शांय करती हुई तूफानी हवा के साथ जोरदार पानी, बिजली तड़कने की भयानक आवाज ने लोगों को बुरी तरह डरा दिया था, कब क्या गिर जाये, किस क्षण में क्या हो जाये इस चिंता से सभी चिंतत थे। यह सब देख परम दयालु गुरुवर का हृदय द्रवित हो गया अतः उस दिन आचार्य भगवन् ने उपवास धारण कर केशलोंच किया, संघ में अन्य भी महाराज, माताजियों ने उपवास किये ओड़ीसा, बंगाल और आंध्रप्रदेशों में आए हुए। भयानक तूफान में पशु-पक्षी एवं किसी भी प्रकार से जन हानि न हो इस हेतु पूज्य

गुरुदेव ने संघ सहित महामंत्र, शांतिमंत्रों की जाप्य की। पुरी समुद्र से उठने वाले इस फोनी चक्रवात तूफान ने आस-पास के ऐरिये में काफी जोर दिखाया कटक, भुवनेश्वर, जाजपुर अर्थात् संघ के विहार वाले रास्ते से होते हुए वह भी कलकत्ता, बंगाल की खाड़ी में विलीन हुआ। कटक भुवनेश्वर, गोपालपुरा, पुरी आदि स्थानों पर उसका अधिक जोर चला किन्तु इससे मात्र १५० किमी. दूरी वैतरणी नदी के किनारे पर पूज्य गुरुदेव ससंघ विराजमान थे यहाँ तूफान का जोर नहीं चल सका। गुरुदेव की जाप्य शक्ति ने उसे ठण्डा कर दिया था। यही कारण रहा जहाँ गुरुदेव थे वहाँ वृक्ष की एक डाल भी नहीं टूटी तो फिर अन्य हानि की तो बात ही दूर। यहाँ से आगे बालेश्वर में थोड़ा अधिक प्रभाव दिखाया किन्तु फिर भी उससे जनहानि रूप विकट समस्या पैदा न हो सकी। और शांति से वह बंगाल की खाड़ी में पहुँच कर शांत हो गया। यद्यपि शोधकर्ताओं के अनुसार उसे दिल्ली राजस्थान की ओर बढ़ना बताया गया था। लेकिन ऐसा भी नहीं हुआ। यह था गुरुवर की साधना का तेजोमय प्रभा मण्डल, जिसने भयानक विपत्ति से प्राणियों की रक्षा की। धन्य हैं पूज्य गुरुदेव जो आत्म साधना के साथ पर कल्याण, रक्षण की भावना से ओतप्रोत हैं।

ऐसे संतों की आवश्यकता है

राजकुमार जैन, भुवनेश्वर

महावीर जयंति तो यहाँ हर वर्ष मनाई जाती है किन्तु पूज्य आचार्य भगवन् के सान्निध्य में जो महावीर जयंति मनाई गई उसने संपूर्ण समाज में एकता संगठन का शंकनाद किया है। यद्यपि भुवनेश्वर में जैन समाज के १०-१२ घर ही हैं उनमें भी परस्परिक सामञ्जस्य नहीं था। किन्तु आचार्य भगवन् के भुवनेश्वर प्रवास में न केवल भुवनेश्वर अपितु कटक, जाजपुर की संपूर्ण दिगम्बर, श्वेताम्बर समाज में एकता का बिगुल बजने लगा, इसी का प्रतिफल था कि इस वर्ष श्वेताम्बर समाज ने स्वयं कहा कि खण्डगिरि में आपके गुरु जी विराजे हैं तो इस वर्ष की महावीर जयंति हम सभी खण्डगिरि में ही ब्रह्दरूप में मनायेंगे और ऐसा ही हुआ। जहाँ हर वर्ष की महावीर जयंति लोगों के बीच मनाई जाती थी वो बहुत बड़ी धर्मसभा के बीच अनवरत चार घण्टे कार्यक्रमों के साथ मनाई गई। गुरुवर के सान्निध्य में महावीर जयंति का जुलूस भी अच्छा रहा। निश्चित ही पूज्य गुरुवर एक ऐसे संत है जो खण्ड को भी अखण्डता में बदल देते है और वैमस्कताएँ, विचारक मतभेद को सौहार्दता परस्परिक एकता, प्रेम, वात्सल्यमें बदल देते हैं। देश समाज, मंदिर एवं पारिवारिक शांति के लिए ऐसे संतों की अत्यंत आवश्यकता है।

स्वर्णिम इतिहास रचा

श्रीमती अनीता जैन

दिगम्बर जैनाचार्यों के प्रतिभा संपन्न सम्मान में एक प्रथम सुनहरा अध्याय जोड़ने वाले परम पूज्य गणाचार्य श्री डॉ. विरागसागर जी महाराज इस सदी के ऐसे महान युवाचार्य हैं जिन्होंने श्रीमद् कुंदकुंदाचार्य विरचित २००० वर्ष पुरातन बारसाणुवेक्खा ग्रंथ पर दो भागों में मात्र १०८ दिनों में लगभग ११०० पृष्ठीय प्रथम संस्कृत टीका 'सर्वोदया' लिखी। तभी इंटरनेशनल ओपन यूनिवर्सिटी जो राष्ट्रीयन कॉलेज मुम्बई की डीन प्रेसीडेन्ट डॉ. मेहर मास्टर मेडम मूस एवं उनकी ७२ डॉक्टर्स की टीम द्वारा २.८.२०१३ इंदौर छत्रपति नगर में डॉक्ट्रेट की मानद उपाधि प्रदानकर अपना सौभाग्य माना कि विज्ञान बुद्धि जीवियों में आज एक संत आचार्य का भी उन्हें समागम प्राप्त हुआ।

यह प्रसंग दिगम्बर जैनाचार्य में ही नहीं विश्व के इतिहास में भी स्वर्णाक्षिरी इतिहास बनकर रहेगा युगों-युगों तक।

आज जहाँ संस्कृत प्राकृत जैसी भाषाओं को जानने वाले जहाँ दुर्लभ होते जा रहे हैं वही इस भाषा संकट के युग में भी पूज्य आचार्यश्री ने यह संस्कृत टीका लिखकर बहुत बड़ी कमी की पूर्ति तो की ही है, साथ ही एक महान आदर्श भी स्थापित किया है ताकि इससे प्रेरणा ग्रहण कर अन्य पूज्य मुनिगण, आर्यिकायें व श्रावक विद्वान भी साहित्य सृजन करते हुए। इसकी श्री वृद्धि की ओर प्रवृत्त होते रहे।

आचार्य कुंदकुंदकृत 'बारस अणुवेक्खा' पर कोई संस्कृत टीका उपलब्ध नहीं रही है लेकिन एक विशाल मुनिसंघ के आचार्य जैसे महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व का निर्वाह करते हुए और निष्कलंक आदर्शों के अनुरूप श्रमणचर्या का पालन करते हुए, अपने व्यस्ततम समय में से समय निकालना तथा उत्कृष्ट साहित्य की रचना करना एक चुनौती भरा कार्य है। जिसे आचार्य

श्री विरागसागर जी महाराज सरलता से संपन्न करते हैं। यह सब उनकी अद्भुत कार्यकुशलता तथा गंभीर विद्वता की सहज अभिव्यक्ति है। उनकी यह टीका 'गागर में सागर' की उक्ति को चरितार्थ करती है। इसमें मधुर भाषा और शब्दावली मनमोहक है तथा सरलता की विशेष विशेषता है। छोटे-छोटे वाक्य मोतियों के समान है, शोभायमान है विलष्टता व दुरुहता नहीं है।

सर्वोदया टीका- इसमें (गाथा-६० में)आस्त्रव अनुप्रेक्षा के उपसंहार में लिखा है कि जितनी भी आस्त्रव हेतु कियाएँ हैं उन सबका त्याग किया जाये।

साहित्य- शुद्धोपयोग, सम्यकदर्शन, आगमचक्खू साहू, तीर्थंकर दिव्यदर्शन आदि ये आचार्य का शोधपूर्ण कार्य है। आचार्य श्री अभीक्ष्य ज्ञानोपयोगी संत हैं जो स्व-परोपकारार्थ जिनवाणी के प्रचार-प्रसार तथा अध्ययन अध्यापन में तल्लीन रहते हैं। उनके द्वारा जिनधर्म की प्रभावना स्वरूप समय-समय पर अनेक ग्रंथों की वाचनाएँ हुई। जिसमें प्रमुख रूप से धवला जी जैसे पुनीत ग्रंथ की १६ वाचनाएँ बुंदेलखण्ड के विभिन्न स्थानों में संपन्न हुई। आपका संघ चलती फिरती यूनिवर्सिटी कहा जाता है।

आप समाज को सदैव यही शिक्षा देते हैं कि चाहे छोटा हो या बड़ा, चाहे किसी भी संघ का हो, पर सदैव सेवा कर उनसे यथासंभव ज्ञान प्राप्त करते रहना चाहिए।

ज्ञान की फुलवारी

श्रीमती कल्पना जैन, अरविन्द जैन

हम छोटे-छोटे से बच्चों की तरफ से आचार्य श्री के चरणों में कोटि-कोटि नमन। गुरुदेव एक सुन्दर और हरे-भरे बगीचे की तरह है। जैसे बगीचे में फूल ही फूल रहते हैं उसी प्रकार से आचार्य गुरुदेव हैं उनमें अपार ज्ञान हैं। बगीचे में तो हवा की बजह से फूल कम भी हो जाते हैं परंतु हमारे आचार्य श्री का ज्ञान ऐसा नहीं है वह तो अपार है वह न तूफान की वजह से न कोई हवा की वजह से कम नहीं बल्कि वह तो बढ़ता ही जाता है। किसी मरीज को कोई बीमारी हो जाए तो शायद बड़ा डॉक्टर सही न कर पाए परंतु हमारे प्यारे गुरुदेव सबके डॉ. हैं वह सब सही कर देगें। उनमें अपार-अपार ज्ञान है। उनके चेहरे पर हमेशा हम सबने खुशी देखी है। वह हमेशा खुश रहते हैं। कभी किसी पर भी क्रोध नहीं बल्कि खुशी की वर्षा करते हैं। वह कितने लकी हैं। लकी इसलिए क्योंकि उन्होंने तो दीक्षा ली ही परंतु उनके माता-पिता ने भी दीक्षा ले ली वो भी उनके माता-पिता ने अपने ही बेटे से ली। इससे बड़ी खुशी की बात कोई हो ही नहीं सकती कि अपने माता-पिता को अपने ही हाथों से दीक्षा देना। उनके ज्ञान की कुछ नहीं कह सकते अपना ज्ञान तो उनके सामने शून्य भी नहीं है। आचार्य श्री के ज्ञान ने सबको इतना प्रेरित कर दिया कि आचार्य श्री ने अपने हाथों से २२३ दीक्षाएँ दी हैं। उनके संग चतुर्विध संघ हैं यह कितनी खुशी की बात है इसी के ऊपर एक भजन प्रस्तुत है-

गुरुवर थैंक यू-२, गुरुवर थैंक यू वैरी मच।
उपकार किए तूमने लाखों, गुरुवर थैंक यू वैरी मच।।
ललितपुर नगर में आप पधारे, उसके लिए थैंक यू वेरीमच।
चतुर्विध संत साथ में लाये, उसके लिए थैंक यू वेरीमच।।

प.पू. गणाचार्यश्री की सम्यक्दर्शन कृति अत्यन्त अनूठी है

मुकेश जैन, राजनगर

इस अनंतकाल की चर्तुगति यात्रा में जीव ने दु:ख ही दुख उठाये है। कारण सम्यक्त्व का न होना जीव की पर द्रव्यों में आसक्ति एवं सच्चे देव गुरु, शास्त्र का सान्निध्य प्राप्त न होना ही जीव के दुख का कारण रहा।

मिथ्यात्वं परम दुखं, सम्यक्त्वं परम सुखं

वात्सल्य रत्नाकर, समता मूर्ति गणाचार्य श्री १०८ विरागसागर जी महाराज द्वारा सृजन की गई सम्यग्यदर्शन नामक कृति अत्यंत अनूठी एवं भव्य जनों को आत्म बोध देने वाली कृति हैं।

बिना सम्यगदर्शन के यह जीव कभी भी भव रूपी समुद्र से पार नहीं हो सकता।

इस कृति में आचार्य जी ने जहाँ मिथ्यात्व पर पर्याप्त प्रकाश डाला हैं कि जीव को मिथ्या मान्यताओं से बचना चाहिये। वहीं दूसरी ओर सम्यग्दर्शन एवं उसकी विभिन्न अवस्थाओं की अनेक आगम ग्रंथों की विवेचना सहित पर्याप्त विवेचना की है।

सम्यग्दर्शन के हर पहलू को बहुत ही सरल एवं सुबोध भाषा में समझाने का आचार्य जी ने सटीक प्रयास किया है।

कैसे यह जीव मिथ्यात्व का क्षय करके अनंतानुबंधी कषायों से बचे उनका स्वरूप क्या है तीन मूढ़ता, षट अनायतम, अवर मदों का त्याग कर इस जीव को नि:शंकतादि आठ अंगों का पालन कैसे करना चाहिये। इनका स्वरूप क्या है। इस ग्रंथ में आचार्य श्री ने 'सम्यग्दर्शन' नाम से 'यथानाम तथा गुण' सम्यक् प्रकाश डाला है। यह कृति भव्य जनों के जीवन में मोक्ष का मार्ग प्रशस्त करे इसी भावना के साथ...

समाचार

धर्मशाला हेतु भूमि पूजन

१६ मई २०१९ को वेलदा (बंगाल) में प.पू. राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज ससंघ ४८ पिच्छी के पावन सान्निध्य में वेलदा समाज द्वारा धर्मशाला निर्माण हेतु भूमि पूजन किया गया।

खड़गपुर (पं. बंगाल) में हुई धर्म प्रभावना

१८ मई २०१९ को खड़गपुर (पं. बंगाल) में प.पू. राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज ससंघ ४८ पिच्छी की भव्य अगवानी की गई। खड़गपुर में मात्र एक दिन का प्रवास था। पर समाज के निवेदन पर विराग सम्यक ज्ञान शिक्षण शिविर २४ मई २०१९ तक आयोजित किया गया जिसमें श्री दिगम्बर जैन मंदिर समिति एवं पूजारी मण्डल ने सम्पूर्ण व्यवस्था को समुचित रूप से पूर्ण किया। साथ ही २३ मई को बुद्धि ऋद्धि वर्धक विधान का आयोजन किया। जिसमें सम्पूर्ण समाज ने भक्ति पूर्वक बड़े उत्साह के साथ भाग लिया। २४ मई को संघ का विहार कलकत्ता की ओर हुआ जिसमें काफी मात्रा में महिला एवं अवाल वृद्ध सभी विहार में पू. गणाचार्य के साथ चले।

सर्वोदया/ रत्नत्रय वर्धिनी टीका

प.पू. आचार्य कुन्दकुन्द देव की महान कृतियाँ बारसाणुपेक्खा एवं रयणसार पर प.पू. राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज द्वारा अत्यन्त ही सरल एवं सहज संस्कृत भाषा में हिन्दी अनुवाद सहित अनुपम टीका जो आगम, अध्यात्म एवं सिद्धान्त की प्रमाणिकता से ओत प्रोत, क्रमश: शोध पूर्ण ग्रन्थ, ११०० पृष्ठीय सर्वोदया एवं १३०० पृष्ठीय रत्नत्रय वर्धिनी- दो दो भागों में भारतीय ज्ञान पीठ से प्रकाशित हो चुकी हैं। मंदिर जी, साधु-संघों तथा विद्वानों ने स्वाध्यायार्थ स्वपर ज्ञान वृद्धि हेतु सर्वोदया टीका ४९०/-रूपये प्रत्येक भाग एवं रत्नत्रय वर्धिनी टीका ६५०/- प्रत्येक भाग के मूल्य पर विक्रय हेतु उपलब्ध है-

प्राप्ति स्थान- १. **भारतीय ज्ञान पीठ (विक्रय केन्द्र)**
४४०५/५ अंसारी रोड, दरियागंज नई दिल्ली पिन को. ११०००३
सं.सूत्र श्री संजय दुवे मो. ८५०६८६२९५४ फोन नं. ९१-०११-२३२४१६१९

२. **श्री सम्यग्ज्ञान विराग विद्यापीठ**
चैत्यालय मंदिर बतासा बाजार, भिण्ड (म.प्र.)
सं.सूत्र पं. वीरेन्द्र जैन, भिण्ड मो.९७५४८०३२२०

३. **श्री दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र विरागोदय धर्मधाम,**
पथरिया, जिला- दमोह (म.प्र.)
सं. सूत्र कपिल सिंघई पथरिया, मो. ९८९३७५३२२३

आध्यात्मिक शंका-समाधान

प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज

वर्तमान भौतिक वादी युग में संसारी प्राणी भोगों की अभिलाषाओं की पूर्ति के लिये दिनरात पैसा कमाने में लगा है। जैन कुल में जन्म लेकर भी छः आवश्यक कर्त्तव्यों को भूलता जा रहा है। संस्कारित परिवारों में देवदर्शन पूजन तो फिर भी व्यक्ति करता है पर स्वाध्याय के लिये उसके पास समय नहीं और जो स्वाध्याय भी करते हैं वे आर्ष परम्परा के आचार्य प्रणीत ग्रन्थों का स्वाध्याय या तो करते ही नहीं या करते हैं तो उसके सही अर्थ भावार्थ को न समझ पाने के कारण ये उन लोगों द्वारा कहे जाते हैं जो अपनी पंथ, आम्नाय विचारधारा या ख्याति लाभ प्रशंसा का कारण कुछ का कुछ बताकर भ्रमित कर देते हैं।

प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज ने मोक्षमार्ग में आरूढ़ होकर क्षितिज की ऊँचाईयों को प्राप्त नहीं किया बल्कि वर्तमान समय के सबसे बड़े चतुर्विध संघ के नायक हैं। ज्ञान की असीम गहराईयों में डुबकी लगाकर सर्वोदया, रत्नत्रय वर्धिनी, श्रमण प्रबोधनी, श्रमण सम्बोधनी आदि संस्कृत टीकाओं के अलावा १५० से भी अधिक आलेखों द्वारा जन मानस के कल्याण के लिये जिनागम को दुर्लभ रत्न प्रदान किये हैं। चारों अनुयोगों को समझाने हेतु जन सामान्य की शंकाओं के समाधान हेतु क्रमिक प्रस्तुति-

शंका- क्या आगम भाषा में कहा गया परोक्ष भाव श्रुतज्ञान ही न्याय/तर्क की भाषा में साम्व्यवहारिक प्रत्यक्ष है। तथा वही स्वसंवेदन प्रताक्ष है?

समाधान- आगम भाषा में जिसे परोक्ष भाव श्रुतज्ञान कहा है उसे ही न्याय की भाषा में सांव्यवहारिक स्वसंवेदन प्रत्यक्ष कहते है किन्तु आध्यात्मिक भावश्रुतज्ञान या स्वसंवेदन इससे अलग है। निश्चिय भावश्रुतज्ञान, शुद्धात्माभिमुख (परिणाम), स्वसंवित्ति, निर्विकल्प समाधि ही आत्मा शब्द से कही जाती है तथा वह वीतराग चारित्र के अविनाभाविभूत केवलज्ञान की अपेक्षा परोक्ष फिर भी छद्मस्थों की अपेक्षा प्रत्यक्ष कही जाती है।

शंका- आगम भाषा तथा आध्यात्मिक भाषा में कथित स्वसंवेदन या भाव श्रुतज्ञान में क्या अंतर हैं?

समाधान- हाँ, देखो **(द्र.सं.टी.गा.५प्र.१३पं.९)** में कहा है कि-

निश्चय भावश्रुतज्ञानं तच्च शुद्धात्माभिमुख स्वसंवित्ति स्वरूपं स्व संवित्त्याकारेण सविकल्पमपीन्द्रियमनोजनितरागादि विकल्प जालरहितत्वंन निर्विकल्पम्। अभेद नयेन तदेवात्म शब्द वाच्यं वीतरागसम्यक् चारित्र विनाभूतं केवलज्ञानापेक्षया परोक्षमपि संसारिणां क्षायिकज्ञानाभावात् क्षायोपशमिक मपिप्रत्यक्षमभिधीयते।

अर्थ- जो निश्चय भावश्रुतज्ञान है वह शुद्धात्माभिमुख स्वसंवित्ति स्वरूप है। परंतु इन्द्रिय मनोजनित रागादि विकल्प जाल से रहित होने के कारण निर्विकल्प है। अभेद नय से वही ज्ञान आत्मा शब्द से कहा जाता है। तथा वह वीतराग सम्यग्चारित्र के बिना नहीं होता है। वह ज्ञान यद्यपि केवलज्ञान की अपेक्षा परोक्ष है। तथापि संसारियों को क्षायिक ज्ञान की प्राप्ति न होने से क्षायोपशमिक होने पर प्रत्यक्ष कहलाता है।

शंका- निश्चय भावश्रुतज्ञान क्या शुद्धात्माभिमुख परिणाम है?

समाधान- हाँ, उपर्युक्त प्रमाण देखें **(शंका नं. १४०)**

शंका- निश्चय भावश्रुतज्ञान क्या स्वसंवित्ति है?

समाधान- हाँ, उपर्युक्त प्रमाण से ही समझे। **(शंका नं. १४०)**

शंका- निश्चय भावश्रुतज्ञान क्या वीतराग निर्विकल्प समाधि का नाम है?

समाधान- हाँ, निश्चय भावश्रुतज्ञान निर्विकल्प समाधि है। **(विशेष देखें शंका समाधान नं. १०९ से ११६ में)**

शंका- अभेद नय यह कौन सा नय है?

समाधान- देखिये **(आ.प.सू. २१६)** में कहा है कि-

'तत्र निश्चयनयोऽभेद विषयो'

अर्थ- उन नयों में निश्चय नय अभेद विषयक है इस कारण उसे अभेद नय भी कहते हैं।

शंका- अभेदनय से क्या भावश्रुतज्ञान को आत्मा कह सकते हैं?

समाधान- हाँ, निश्चय नय से भावश्रुतज्ञान और आत्मा एक ही है अत: उसे आत्मा कह सकते है।

शंका- तो क्या द्रव्यश्रुतज्ञान आत्म नहीं है?

समाधान- नहीं, द्रव्यश्रुतज्ञान आत्म से भिन्न है फिर भी भावश्रुतज्ञान में कारण है।

शंका- द्रव्य श्रुतज्ञान तथा भाव श्रुतज्ञान के स्वरूप को एक बार पुन: समझाइये?

समाधान- देखिये **(गो.सा.जी.का.जी.प्र.टी. ३४८/७४४/१५)**

अंगबाह्य सामायिकादि चतुर्दश प्रकीर्णक भेद द्रव्य भावात्मक श्रुतं पुद्गल द्रव्य रूपं वर्ण पदवाक्यात्मकं द्रव्यश्रुतं...।

अर्थ- आचारादि अंग तथा सामायिक आदि १४ प्रकीर्णक अंगबाह्य है यह सब द्रव्यभावात्मक श्रुत है उसमें से पुद्गल द्रव्य रूप वर्ण (अक्षर) पद वाक्यात्मक श्रुत है वह द्रव्य श्रुतज्ञान है। **(विशेष देखें शंका समाधान नं. २२३ से २२७ में।)**

अध्यात्मिक शंका-समाधान कृति से साभार

नित्य दातोन करना चाहिए

१. टूथपेस्ट की अपेक्षा नीम आदि का दातोन श्रेष्ठ होता है।

२. कई टूथ-पेस्टों में पशुओं की चर्बी एवं हड्डियों का चूरा मिलाया जाता है।

३. प्रत्येक टूथपेस्ट में सार्बिटोल, सोडियम लारिल सल्फेट, क्लोराईड मिला रहता है।

४. सार्बिटोल से बच्चों को दस्त लग सकते हैं।

५. झाग पैदा करने के लिए सोडियम लारिल सल्फेट होता है- इससे पेट खराब होता है।

६. क्लोराईड सरासर घातक विष है किन्तु भारत में अत्यधिक बिकने वाला टूथपेस्ट कोलगेट को बनाने का लाइसेन्स ड्रग्स एण्ड कॉस्मेटिक्स एक्ट १९७२ के अंतर्गत मिला है।

७. कम्पनी ने घोषणा की है कि इसमें कैल्शियम कॉर्बोनेट डाइ कैल्शियम फॉस्फेट, सोरबीताय पानी तथा फ्लेबरिंग रहता है इसका उत्पादन बम्बई, औरंगाबाद में होता है।

८. गुजरात में स्थित ए. एफ. आर. एस ने शोध कर ज्ञात किया है कि जानवरों की हड्डी से प्राप्त होनेवाले इस तत्व को टूथपेस्ट में प्रयोग किया जाता है इसे डाइ कैल्शियम फॉस्फेट कहते हैं।

९. टूथपेस्ट में हड्डी का बुरादा मिलाया जाता है जिसमें हाथी के दांतों का भी प्रयोग किया जाता है।

१०. आयुर्वेद दंत मंजन भी किया जा सकता है।

११. मंजन अनामिका अंगुली से ही करना चाहिए।

१२. मंजन या दातोन से तब तक दांत साफ करना चाहित जब तक कि उनका मैल न निकल जाए।

१३. दातोन के पश्चात् जीभी के द्वारा जीभ को भी साफ करना चाहिए।

१४. दातोन नित्य करना चाहिए, दातोन करने से मुख शुद्ध रहता है, बदबू नहीं आती तथा दांत विषयक रोग नहीं होते और दांत मजबूत रहते हैं। किंतु संत साधु जन इंद्रिय जय तथा ब्रह्मचर्य की सुरक्षा के लिये इसका त्याग करते हैं।

'संस्कार सुरभि' से साभार

विराग सेतु

वावीस-विरागो

(प.पू. राष्ट्र संत गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज)

डॉ. उदयचन्द्र जैन

जिन्होंने अल्प वय में ही मोक्षमार्ग पर आरूढ़ होकर क्षितिज की ऊँचाईयों को प्राप्त किया, घनघोर उपसर्गों में भी समता धारण कर आत्मान्वेषी रहे, ज्ञान की अथाह गहराईयों में डुबकी लगाकर प.पू. आचार्य श्री कुन्दकुन्द स्वामी के प्राचीन ग्रंथ वारसाणु पेक्खा पर संस्कृत 'सर्वोदय टीका' को लिखकर जिनागम के लिए एक दुर्लभ रत्न प्रदान किया है। ऐसे सिद्धांतरत्न प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर महाराज के जीवन दर्शन का सुंदर हृदयस्पर्शी चित्रण करने वाले डॉ. उदयचंद्र जैन उदयपुर के विराग चेतना युक्त नवीन प्राकृत महाकाव्य 'विराग-सेतु' की क्रमिक प्रस्तुति-

दोणअ-पच्छा सयंस-पत्ती आइरियो सो तेरणणव्वे।
कप्पदुमोकप्पो सुद-वण्णो, धम्मधाराए सोहससव्वे।। २९।।

द्रोणागिरि के पश्चात् सन् १९९३ का चातुर्मास श्रेयांसगिरि में हुआ, तब वे आचार्य विरागसागर कल्पद्रुम विधान के समय से श्रुतकल्प रूप अक्षर युक्त ही रहे। उन्होंने-उस धर्मधरा पर उनका सभी तरह से विस्तार किया।

सेयंस-वास-समए अदिरोग-जुत्तो
सो आइरीय-परमो हि विराग-सुत्तो।
आहार-किंचिण हु णेदि विसेस-णिद्दं,
वेदेदि देह-णस-जाल-असंख-वेदं।। ३०।।

श्रेयांसगिरि के वर्षा वास में आचार्य विरागसागर अत्यधिक रोग से पीड़ित हो गए। वे आहार भी नहीं लेते, उन्हें निद्रा भी नहीं आती, उनकी सम्पूर्ण देह के नसजाल असंख वेदना को उत्पन्न करते हैं।

सो धीर-पण्ण-गुणवंततदो वि रोगी,
सादं विणा वि जर-जज्जर-खीण-कायी।
सेट्ठीगुणी भिसग-आदि-असाय-जुत्ता
तीवोदयादु समए ण हु एलपेही।। ३१।।

वे आचार्य विरागसागर धीर, प्रज्ञावन्त, गुणवन्त इस समय रोग ग्रस्त हैं, साता बिना अर्थात् असाता के कारण जर्जर शरीर हो गए, श्रेष्ठी, गुणी भिषग आदि असहाय ही रहते तब तीव्रोदय से लोग एलोपेथिक दवाईयाँ लेने का अनुरोध करते हैं।

देविंद राज रघू-बाबू-कपूर-वेज्जो,
तिल्लोगचन्द-भिसगो वि सुरिंद आदी।
आगच्छएंति कुणएंति सरीर इक्खं
पामोद-मोद रहिदो असहाय-होंति।। ३२।।

डॉ. देवेन्द्र, डॉ. राजेन्द्र, वैद्य रघुवरप्रसाद, वैद्य बाबूलाल, डॉ. कपूरचंद्र, डॉ. त्रिलोकचन्द्र, डॉ. सुरेन्द्र, डॉ. प्रमोद आदि भी असमर्थ रहते हैं। वे सभी आते और शरीर का परीक्षण करते हैं।

सत्थस्स सुत्त-भिसगो वि विराग-सूरी,
तिव्वोदयादु दुह-जण्ण-जरादु जुत्तो।

चिंतेदि णो अविसमाहि-सु-लेहझाण,
झाणे णिमग्ग-तव-संजम-जोग-लीणो।। ३३।।

वे आचार्य विरागसागर शास्त्र के सूत्र भिषण थे, फिर भी तीव्र दु:ख जन्य ज्वर से पीड़ित हो गए। वे इसकी चिन्ता नहीं करते, अपितु सल्लेखना समाधि की क्रिया युक्त ध्यान, तप, संयम योग आदि में लीन रहते हैं।

पादं सुणेदि सुद-सुत्त-सदा मुणेदि,
किंचिं च काल-मुणिराज-णिरोग-कायी।
झाणेदि सो तध तदेव विहिं च पुव्वं,
कुव्वेदि जाव मणणं अणुचितणं च।। ३४।।

वे उस क्षीणकाय अवस्था में पाठ/प्रतिक्रमण सुनते एवं श्रुतसूत्र आदि का मनन करते हैं। फिर कुछ समय पश्चात् वे मुनिराज निरोगी काया वाले हो जाते हैं। वे उसी तरह विधिपूर्वक ध्यान करते, जाप करते और मनन-अनुचिन्तन आदि को महत्व देते हैं।

झाणग्ग-सील-तवए अहिराज-रूवं,
पस्सेदि अप्प-णिलए ण कुणेदि कंदं।
सो धीरे-वीर-सुद-णीर-समाहिदो हि,
सव्वे सहेंति उवसग्ग-सदा असंका।। ३५।।

वे तो ध्यानस्थ, तप में लोग कभी-कभी सर्पराज के रूप को भी देखते हैं, पर वे आत्म-स्थित चीखते नहीं, अपितु वे वीर, धीर, श्रुतनीर में समाहित सदैव नि:शंक उपसर्ग सहन करते रहते हैं।

वीणाइ सो वि पउराणव-सम्म काले,
पंचाणवे ललिद-वास अणंद-दाई।
छिण्णाणवे जबल-वास-सुसुत्त जुत्तो,
अज्जेव गाम-उद-देसिहस्स-सत्ते।। ३६।।

१९९४ का चातुर्मास बीना (सागर), १९९५ का चातुर्मास ललितपुर, १९९६ का चातुर्मास जबलपुर आदि उत्तम ग्रन्थों के आधार रहे हैं। आज सन् २००७ में ऊदगाँव (दक्षिण) अत्यन्त धन्य हो रहा है।

दिक्खाइ हं पणसवीस-सु-सम्म-काले,
णिद्दे वि कस्सय-मुणिस्स सदा णमोत्थु।
सूरिं णमोत्थु उदयो वि अपच्च-भूदो,
कुव्वे वि कव्व-कलणादु विचार-सत्थं।। ३७।।

आज सन् २००७ दिसम्बर १४ के पुण्य दिवस पर मैं उन्हें बार-बार नमोऽस्तु करता हूँ। मुझे मुनि श्री विकर्षसारग के निर्देशन से जो यह काव्य लिखने की प्रेरणा मिली वह उदय इस समय विचारों से पूर्ण शास्त्र युक्त हो, ऐसी कामना से मैं उन्हें अप्रत्यक्ष पुन: नमोऽस्तु करता हूँ।

सोम्मो-सहावि सरलो सरलो वहावी,
वेरग्गा-मग्गि-सुद-सम्म-सुसुत्त-कम्मी।
अज्झप्प-पंच समयंचरिय चरेदि
अप्पे विकस्स-करणं चरदे पमाणी।। ३८।।

जो सौम्य है, स्वभाव से सरल, सर ल-सर सरस्वती के ल-लघुत्व रूप में अत्यन्त प्रभावी है जो वैराग्यमार्गी श्रुत की सम्यक् सूत्र धारा के कर्मी हैं, जो अध्यात्म के पंचसमय/पंचाचार की चर्चा को पालते हैं वे आत्म विकर्ष के प्रमाणी मुनि विकर्ष सागर हैं।

क्रमश.....

स्वस्थ रहने के उपाय

संकलन- श्रमणी आर्यिका विवक्षाश्री माता जी

- मल, मूत्र, छींक जम्हाई, निद्रा, उल्टी, डकार, भूख, प्यास, अपानवायु, चलता हुआ शुक्र, आंसू तथा परिश्रम से उत्पन्न हुआ श्वास वेग यह १३ अधारणीय वेग हैं। इन समस्त वेगों को रोकना अपने स्वास्थ्य पर कुल्हाड़ी मारने जैसा है।
- हमारा शरीर प्राणों के कारण ही जीवित है। हमारे शरीर में प्राणों के कारण ही शक्ति रहती है। इस शक्ति को बनाये रखने के लिए प्राणायाम आवश्यक है इसलिए नित्य प्राणायाम करना उत्तम स्वास्थ्य की गारंटी है।
- शीतकाल में प्रात:काल धूप का सेवन श्रेयस्कर होता है।
- भोजन कितना भी स्वादिष्ट क्यों न हो, क्षमता के अनुसार ही करना चाहिए, आवश्यकता से अधिक भोजन हानिकारक होता है।
- स्वस्थ रहने का मूलमंत्र ५ कार्यों में निहित है। प्रात: उठना, शौच करना, स्नान, भोजन व शयन को नियमित व ठीक समय पर किया जाये तो व्यक्ति सदैव स्वथ्य व निरोगी रहेगा।
- गर्म जल से चेहरा धोना, आँखे धोना, स्नान करना व गुदा धोना हानिकारक है। इनके लिए सदैव शीतल जल का ही प्रयोग करना श्रेयस्कर है।
- भोजन करते समय शोक-चिंता व तनाव में न रहें। भोजन करते समय एकाग्र रहना चाहिए।
- देखे बिना जल पीना व हाथ घोए बिना भोजन करना स्वास्थ्य की दृष्टि से हानिकारक है।
- ५० वर्ष की आयु के बाद प्रोटीन अल्प मात्रा में ही लें तथा वसा लेना बिल्कुल बंद कर दें। प्राचीन ग्रंथों के अनुसार ७५ वर्ष की उम्र के पश्चात् अनाज का सेवन बंद करके हरी-पीली सब्जियाँ, फल और फलों के रस भोजन में सम्मिलित किया जाय तो वृद्धावस्था में होनेवाले तमाम रोगों से बचा जा सकता है।
- सोते समय अपने पैर दक्षिण दिशा में करके नहीं सोना चाहिए इससे दिल व दिमाग पर दबाव पड़ता है- यह एक वैज्ञानिक सत्य है।
- क्रोध, चिंता व शोक स्वास्थ्य के ३ शत्रु माने जाते हैं। यह स्वास्थ्य के साथ साथ सौंदर्य को भी नष्ट कर देते हैं।
- उपवास स्वस्थ रहने का सरल उपाय है। सप्ताह में एक दिन उपवास अवश्य करें।
- वस्त्रों का चुनाव मौसम के अनुसार ही करें।
- मांसाहार स्वास्थ्य का सबसे बड़ा शत्रु है। इससे स्वास्थ्य तो खराब होता ही है व्यक्ति के आचार विचार भी हिंसक हो जाते हैं। मांसाहार करनेवाले व्यक्ति के शरीर से जानवर की भांति गंध आने लगती है। इसके साथ ही कई बीमारियाँ भी उसके साथ जुड़ जाती हैं जैसे- मोटापा, रक्तचाप, कैंसर, गठिया, मधुमेह, पित्त, संबंधी व हृदय सम्बन्धित बीमारियाँ।
- जैसे समय पर पौष्टिक आहार लेना जरूरी है उसी प्रकार समय पर उचित नींद लेना भी जरूरी है। प्रत्येक व्यक्ति को स्वस्थ रहने के लिए प्रतिदिन ६-८ घंटे की नींद लेनी चाहिए। इससे कम या ज्यादा नींद लेना दोनों स्वास्थ्य की दृष्टि से हानिकारक है।
- भोजन को हमेशा चबा-चबाकर खूब महीन टुकड़े करके खायें।
- भोजन के बाद तुरंत सोना या परिश्रम करना हानिकारक है।
- आपकी उम्र कितनी भी हो, हालात कैसे भी हो हमेशा मानसिक शांति को बनाये रखने की कोशिश करें।

जून माह के महोत्सव दिवस

जन्म/दीक्षा/पुण्यतिथि	तारीख	स्थान /नाम
समाधि दिवस	३.६.२०१३	इन्दौर, क्षुल्लिका विश्वपुष्पा श्री माता जी
आचार्य पद	७.६.ज्येष्ठ शु. ५	आचार्य श्री आदिसागर जी अंकलीकर
दीक्षा दिवस	८.६.२००३	ललितपुर, श्रमणश्री विनम्रसागर जी, श्रमण श्री विकर्षसागर जी, श्रमण श्री विशोक सागर जी, श्रमण श्री विनिश्चलसागर जी, श्रमण श्री विश्वेशसागर जी, श्रमणी आ. विश्वास श्री माता जी, श्रमणी विकक्षाश्री माता जी, क्षु. विवर्धन सागर जी, क्षु. विश्वलोकेशसागर जी, क्षु. विश्वविद सागर जी।
पुण्यतिथि	११.६.२००२	सागर, क्षुल्लिका विर्नणताश्री माता जी
जन्म दिवस	११.६.१९८१	सतना, श्रमण श्री विधेयसागर जी
जन्म दिवस	११.६.१९५४	आगरा, श्रमण श्री विश्वानुत्तर सागर जी
दीक्षा दिवस	१९.६.१९९१	पन्ना, ऐ. श्री विशुद्धसागर जी
क्षुल्लक दीक्षा दिवस	२०.६.१९५०	बडवानी, प.पू. आ. विमलसागर जी महाराज
दीक्षा दिवस	२१.६.२००२	सागर, श्रमणी विबोधश्री माता जी, श्रमणी विविक्तश्री माताजी, श्रमणी वियुक्तश्री माताजी, श्रमणी विजेताश्री माताजी, श्रमणी विद्वतश्री माताजी, श्रमणी विश्वासश्री माताजी।
पुण्य तिथि	२२.६.१९९८	शौरीपुर, श्रमण श्री विश्वलोक सागर जी
दीक्षा दिवस	२५.६.१९९८	शौरीपुर, ऐ. श्री विहित सागर जी, ऐ. श्री विमद सागर जी, ऐ. विश्वयश सागर जी, ऐ. श्री विश्वलोचन सागर जी।
जन्म दिवस	२६.६.१९७४	जतारा (म.प्र.), श्रमणाचार्य श्री विमर्षसागर जी
जन्म दिवस	२६.६.१९७३	पथरिया (म.प्र.), श्रमणाचार्य श्री विनिश्चय सागर जी
दीक्षा दिवस	२७.६.२००२	सागर, आर्यिका विनतश्री माताजी।

ज्येष्ठ माह के व्रत एवं कल्याणक महोत्सव

२४ मई २०१९	ज्येष्ठ कृष्ण ६	श्री श्रेयांसनाथ जी गर्भ कल्याणक
२७ मई २०१९	ज्येष्ठ कृष्ण ८	श्री विमलनाथ जी गर्भ कल्याणक
२९ मई २०१९	ज्येष्ठ कृष्ण १०	श्री विमलनाथ जी गर्भ कल्याणक
३१ मई २०१९	ज्येष्ठ कृष्ण ११	श्री अनन्तनाथ जी, जन्म तप कल्याणक
२ जून २०१९	ज्येष्ठ कृष्ण १४	चतुर्दशी व्रत एवं श्री शांतिनाथ जी जन्म तप, मोक्ष कल्याण
३ जून २०१९	ज्येष्ठ कृष्ण ३०	रोहिणी व्रत एवं श्री अजितनाथ गर्भ कल्याणक
७ जून २०१९	ज्येष्ठ शुक्ला ४/५	श्री धर्मनाथ मोक्ष कल्याणक एवं श्रुत पंचमी
१० जून २०१९	ज्येष्ठ शुक्ला ८	अष्टमी व्रत
१४ जून २०१९	ज्येष्ठ शुक्ला १२	श्री सुपार्श्वनाथ जन्म तप कल्याण
१६ जून २०१९	ज्येष्ठ शुक्ला १४	चतुर्दशी व्रत

जुलाई माह के महोत्सव दिवस

जन्म/दीक्षा/पुण्यतिथि	तारीख	स्थान /नाम
जन्म दिवस	१.७.१९५१	मडावरा (उ.प्र.) श्रमण श्री विश्वाक्षर सागर जी
जन्म दिवस	१.७.१९६९	पथरिया (म.प्र.), क्षुल्लक विवक्षित सागर जी
जन्म दिवस	१.७.१९८२	सागर (म.प्र.), श्रमणी आर्यिका विकाम्याश्री माता जी
जन्म दिवस	२.७.१९७७	कुंवरपुर (म.प्र.), श्रमण श्री विश्रांतसागर जी
जन्म दिवस	२.७.१९७८	जबलपुर (म.प्र.), आचार्य श्री विकर्ष (प्रज्ञा) सागर जी
दीक्षा दिवस	३.७.२०११	किशनगढ़ (राज.), ऐ. विश्वदृगसागर जी, ऐ. विराजसागर जी, क्षु. विश्वदक्ष सागर जी, क्षु. विश्वभानु सागर जी, क्षु. विश्वहित सागर जी, क्षु. विश्वनाथ सागर जी, क्षुल्लिका विप्रदा श्री माता जी, क्षुल्लिका विभद्राश्री माता जी।
दीक्षा दिवस	४.७.२०१०	उदयपुर (राज.), श्रमण श्री विधेयसागर जी, श्रमण श्री विश्वाक्षर सागर जी, श्रमणी आर्यिका वियोजनाश्री माताजी, श्रमणी आर्यिका विसंयाजनाश्री माता जी, श्रमणी आर्यिका विचक्षणश्री माताजी, श्रमणी आर्यिका विरक्षणा श्री माता जी, श्रमणी आर्यिका विदर्शनाश्री माताजी, क्षु. विश्वप्रभु सागर जी, क्षु. विश्ववन्धु सागर जी, क्षु. विदेहसागर जी, क्षुल्लिका विदितश्री माता जी, क्षु. विदिताश्री माताजी, क्षु. विजितश्री माताजी, क्षु. विजिताश्री माताजी, क्षु. विस्मिताश्री माताजी, क्षु. विभूषणाश्री माताजी, क्षु. विभाषाश्री माताजी, क्षु. विभूषाश्री माताजी, क्षु. विरतश्री माताजी, क्षु. विरदश्री माताजी, क्षु. विनोदश्री माता जी।
जन्म दिवस	४.७.१९५३	भिण्ड (म.प्र.), श्रमण श्री विश्वसूर्य सागर जी
जन्म दिवस	४.७.१९७८	धनगौल (उ.प्र.) श्रमण श्री विभास्वर सागर जी
जन्म दिवस	१३.७.१९९९	ग्वालियर (म.प्र.) ऐ. विनियोग सागर जी
जन्म दिवस	१५.७.१९७९	सांवला (राज.), श्रमणी आर्यिका वियोजनाश्री माताजी
जन्म दिवस	१८.७.१९८२	भिण्ड (म.प्र.), श्रमणी आर्यिका विप्रभाश्री माताजी
समाधि दिवस	२०.७.२०१८	मुंबई श्रमण मुनि समाधि सागर जी
जन्म दिवस	२४.७.१९८३	ललितपुर (उ.प्र.) श्रमणश्री विभंजन सागर जी

आषाढ माह के व्रत एवं कल्याणक महोत्सव

१९ जून २०१९	आषाढ कृष्ण २	श्री आदिनाथ जी गर्भकल्याणक
२३ जून २०१९	आषाढ कृष्ण ६	श्री वांसुपूज्य जी गर्भकल्याणक
२५ जून २०१९	आषाढ कृष्ण ८	अष्टमी व्रत, श्री विमलनाथ जी मोक्ष
२७ जून २०१९	आषाढ कृष्ण १०	श्री नमिनाथ जी जन्म, तप कल्याणक
१ जुलाई २०१९	आषाढ कृष्ण १४	चतुर्दशीव्रत, रोहिणी व्रत
८ जुलाई २०१९	आषाढ शुक्ल ६	श्री महावीर स्वामी गर्भ कल्याणक, नेमीनाथ जी मोक्ष कल्याणक
९ जुलाई २०१९	आषाढ शुक्ल ८	अष्टमी व्रत अष्ठान्हिका पर्व प्रारंभ
१५ जुलाई २०१९	आषाढ शुक्ल १४	चतुर्दशीव्रत, चातुर्मास्य व्रत नियमादि प्रारम्भ
१६ जुलाई २०१९	आषाढ शुक्ल १५	गुरु पूर्णिमा, अष्टान्हिका पर्व समाप्त

समाचार

सिद्धक्षेत्र उदयगिरि खण्डगिरि से भावभीनी विदाई

२५ अप्रैल २०१९ को प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज ससंघ के विहार होने से पूर्व धर्म सभा का आयोजन किया गया। जिसमें प.पू. गणाचार्य श्री ससंघ का विहार कराने वाले संघपति श्री केशवचन्द जैन गलपरिया परिवर कटक एवं विहार में साथ चल रहे श्रावकों का सम्मान उड़ीसा जैन समाज द्वारा किया गया। श्री कमलजी धनावत एवं श्री मनोज जी मंगल एवं भुवनेश्वर कटक समाज द्वारा पू. गणाचार्य श्री के प्रति अपनी विनयांजलि अर्पित की गई तथा उदयगिरि-खण्डगिरि प्रवास के दौरान पू. गणाचार्य श्री एवं समस्त संघ की सेवा व्यवस्था में अथवा अन्य किसी प्रकार की त्रुटि के लिये क्षमायाचना करते हुए पू. गुरुदेव से सदैव प्रेमवात्सल्य व आशीर्वाद बनाये रखने की कामना की। इस अवसर पर प.पू. गणाचार्य श्री द्वारा लिखित तीर्थकर वर्धमान कृति का द्वितीय संस्करण का विमोचन पुण्यार्जक परिवार श्री अजय जी धनावत परिवार द्वारा किया गया। प.पू. गणाचार्य श्री ने सभी को अपना मंगल आशीर्वाद देते हुए क्षेत्र के विकास के लिये कार्य करने की प्रेरणा दी। ऐलक श्री गोसल सागर जी द्वारा भी व्यक्तिगत रूप से पू. गुरुदेव के प्रति अपनी विनयांजलि अर्पित की गई।

पू. गुरुदेव का ५७ वाँ अवतरण दिवस मनाया

२ मई २०१९ को सरस्वती शिशु मंदिर भवन मुलापाल (जाजपुर उड़ीसा) में कटक, भुवनेश्वर जाजपुर उड़ीसा जैन समाज ने प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज का ५७ वाँ अवतरण दिवस मनाया। कार्यक्रम में चित्र अनावरण श्री केशवचन्द्र गलपरिया परिवार (संघपति) कटक श्री मुन्नालाल जी जाजपुर द्वारा एवं दीप प्रज्वलन गुरु भक्त परिवार जयपुर एवं श्री राजू काकाजी द्वारा किया गया। पू. गुरुदेव का पादप्रक्षालन श्री राजकुमार जी भुवनेश्वर, श्री अजय जी धनावत कटक, श्री प्रदीप जी आदि के द्वारा किया गया। बालिकाओं द्वारा भक्ति नृत्य की प्रस्तुति की गई। प.पू. गणाचार्य श्री की भक्ति संगीत के साथ अष्ट द्रव्य से पूजन की गई। पू. गणाचार्य श्री रचित लघुशान्तिधारा का प्रकाशन श्री सुभाष चंद , श्रीमती मीना जैन भिण्ड द्वारा कराया गया। जिसका विमोचन संघपति श्री केशवचन्द जी जैन परिवार द्वारा किया गया। इस अवसर पर श्रमणी आर्यिका विशिष्ट श्री माता जी एवं मुनिश्री विवर्धन सागर जी ने पू. गुरुदेव के प्रति अपनी विनयांजलि अर्पित करते हुए पू. गुरुदेव की गुण महिमा का व्याख्यान किया।

दिनांक १३ मई को प.पू. गणाचार्य श्री ससंघ का बंगाल में भव्य प्रवेश पर बेलहा खड़गपुर एवं कलकता सहित बंगाल जैन समाज द्वारा भव्य अगवानी की गई तथा वैशाख शुक्ल ९ को प.पू. गणाचार्य श्री की तिथि अनुसार जन्म दिवस का दो दिवसीय कार्यक्रम आयोजित कर १४ मई २०१९ को बेलदा में भव्य नगर प्रेवश के साथ पूज्य गणाचार्य श्री के ५७वे अवतरण दिवस पर भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

आशीर्वाद प्राप्त किया

२८ अप्रैल २०१९ को जगतपुर कटक में भा.ज.पा से विधायक उम्मीदवार श्री शोभिल विशवाल एवं श्रीमती लक्ष्मी विशवाल पूर्व मेम्बर जिला परिषद कटक प.पू. राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज के दर्शनार्थ पधारे। जिन्होंने पू. गणाचार्य श्री को श्रीफल भेंट कर आशीर्वाद प्राप्त किया।

११ मई २०१९ को आनन्दमार्ग विद्यालय वालासोर में वालासोर लोक सभा सीट से भा.ज.पा के उम्मीदवार विधायक श्री प्रताप चरण जी सांरगी की प.पू. गणाचार्य श्री के दर्शनार्थ पधारे जिन्होंने फल भेंट कर आशीर्वाद प्राप्त किया तथा हल्दीपाडा तक १० किमी. पू. गणाचार्य श्री के साथ विहार किया। विहार में अनेक स्थानों पर प्रतापचरण जी के समर्थकों ने पू. गणाचार्य श्री ससंघ का दर्शन कर पू. गणाचार्य श्री का आशीर्वाद प्राप्त किया।

२०१९ के वर्षायोग हेतु श्रीफल भेंट किया

१८ मई २०१९ को खड़गपुर (पं. बंगाल) में कलकत्ता (पं. बंगाल) से लगभग ४०० श्रावको ने प.पू. राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज को श्रीफल भेंट कर वर्ष २०१९ का वर्षायोग कलकत्ता में करने के लिए निवेदन किया। उसी प्रकार दिनांक १९ मई २०१९ को लगभग २०० श्रावको द्वारा पू. गणाचार्य को वर्ष २०१९ का वर्षायोग कलकता में करने हेतु श्रीफल भेंट कर निवेदन किया गया।

विराग वर्ग पहेली 42

उदाहरण – र वि रा ग नहीं करना चाहिए। (प.पू. गणाचार्य गुरुवर का नाम) जैसे–विराग

भ	र	क	ग	ई	न	आ	दि
री	म्य	बि	न	व	माँ	गे	ध
र	थी	है	म	व	त	मे	ष
ली	रि	हि	झो	व	र	ली	नि
ह	हा	ग	रा	ई	भ	ल	खा
म	दे	ऐ	त	ब	द	ल	नी
खो	कि	वि	णी	री	ख	शि	स्म
गु	रु	वों	की	भ	क्ति	से	दे

विराग वर्ग पहेली 41 के उत्तर

(1) बाहुबली
(2) यशोभद्र
(3) श्री चन्द्र
(4) श्री धर
(5) हनुमान
(6) वसुदेव
(7) कुंथुनाथ
(8) प्रसेनजित
(9) प्रद्युम्न
(10) कनक प्रभ

नोट– (1) इसमें आपको कोई १० त्यौहार के नाम दिये है। आपको खोजने हैं।
(2) जहाँ उत्तर मिले वहाँ ☐ डब्बा बनाये व क्रम से नाम लिखें।
(3) उदा.- इसमें नाम आड़े, तिरछे, ऊपर से नीचे, नीचे से ऊपर भी हो सकता है।

उत्तर भेजनेवाले का नाम व पता (स्पष्ट तथा शुद्ध)

नाम .....मो. .....

पिता/पति का नाम .....

पता .....